* वर्ष 45 * अंक 4 * अप्रैल 2018

हंसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 45 • अंक 4 • अप्रैल 2018 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

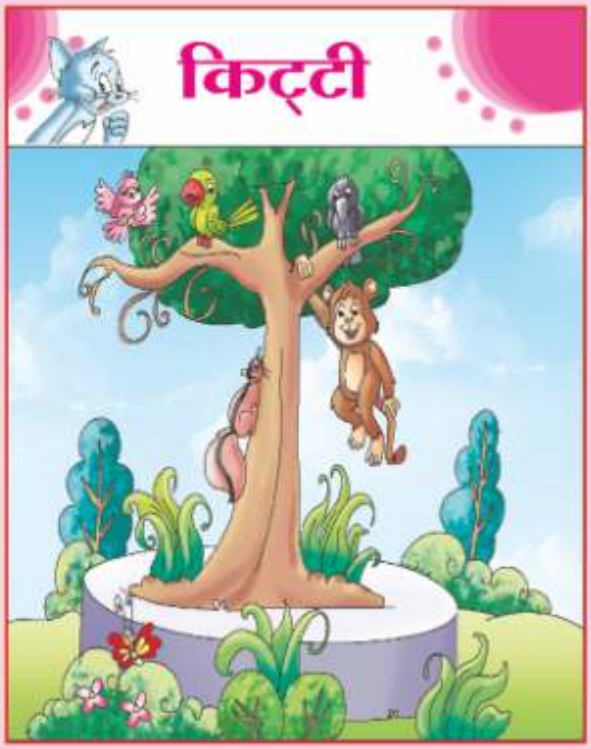

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
25. क्या आप जानते हैं ?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

कहानियां

8. बदला और बलिदान
: दिनेश जैन

12. अनूठा न्याय
: अनिता जैन

17. रानी रूपसुन्दरी का आदर्श
: राधेलाल 'नवचक्र'

21. नम्रता ही स्वर्ग है
: ईलू रानी

27. एक बूंद की कीमत
: राजकुमार जैन 'राजन'

41. अक्लमन्द लड़का
: पुष्कर द्विवेदी

43. मरहम
: सीताराम गुप्ता

46. धीर गति
: ऊषा सभरवाल

विशेष/लेख

7. बाबा गुरबचन सिंह जी के अनमोल वचन

16. क्यों करती हैं मधुमक्खियां नृत्य
: डॉ. विनोद गुप्ता

22. दवाई से कम नहीं पानी
: विभा वर्मा

23. नीलगिरि तहर
: डॉ. परशुराम शुक्ल

25. विचित्र मछली कैटफिश
: किरण बाला

31. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

32. मैना
: कैलाश जैन एडवोकेट

40. अजूबे फूल
: उदय ठाकुर

कविताएं

6. मिलके रहें, बातें
: सुकीर्ति भटनागर

10. जल ही जीवन है..., मीठे प्यारे माँ के बोल
: हरजीत निषाद

26. आंगन में पेड़ लगाओ
: राजकुमार जैन 'राजन'

26. वृक्ष लगायेंगे
: मदन देवड़ा

39. चिड़िया रानी
: मीनू सिंह

39. चिड़िया
: गौरीशंकर वैश्य

47. तितली, जागो बच्चो
: रामअवध राम

सबसे पहले

सार्थक सोचें

अपने मम्मी-पापा के साथ बैठकर भाई-बहन दोनों भोजन कर रहे थे।

पापा ने बच्चों से पूछा– आप दोनों की परीक्षा कैसी चल रही है?

उत्तर में उन दोनों ने कहा– ठीक चल रही है। साथ ही बहन ने कहा– पेपरों के पश्चात् हम किसी 'हिल स्टेशन' पर जाकर छुट्टियां मनाएंगे। इतने में साथ बैठा भाई बोला– नहीं, इस बार हम किसी ऐतिहासिक स्थल पर भ्रमण करने जाएंगें। दोनों के विचार भिन्न थे इसलिए वे दोनों अपनी-अपनी बात पर अडिग हो गये और तर्क-वितर्क शुरू हो गया।

पापा ने कहा– कल तुम दोनों की परीक्षा है, इसलिए तुम जाकर अपने-अपने पेपर की तैयारी करो। यह बात तो फिर भी हो सकती है। अनमने मन से उन दोनों ने यह बात स्वीकार कर ली।

अगले दिन दोनों पेपर देने के लिए घर से निकल पड़े।

भाई-बहन दोनों ने रात को पढ़ाई तो की परन्तु उनके मन में अपनी-अपनी छुट्टियां मनाने के ढंग को लेकर उत्सुकता अधिक थी कि किस तरह से मेरी बात पापा मान लें। दोनों सोचते रहे कि इस बार तो पापा को मेरी बात माननी ही चाहिए। इस ऊहा-पोह में वे दोनों ठीक से सो भी नहीं पाए और एक-दूसरे के प्रति विपरीत सोच से भी नहीं बच पाए।

दोनों अपने-अपने परीक्षा-स्थल पर पहुँच गये और पेपर की इन्तजार करने लगे। जैसे ही पेपर मिला 'अरे यह क्या?' बहन मन में बोली। क्योंकि प्रश्न-पत्र में पहले ही प्रश्न में लिखा था कि किसी ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का वर्णन करो। आज तक बहन ने किसी ऐतिहासिक स्थल की न तो जानकारी ली थी और न ही उसके बारे में पढ़ा था। उसने किसी तरह से बाकी प्रश्न हल किये और धीरे-धीरे सोचने लगी कि भाई शायद ठीक ही कह रहा था। अगर उस समय उसका विरोध न करती तो अवश्य वह किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल के बारे में सुनाता और बताता तो मेरा प्रश्न-पत्र का कार्य भी आसान हो जाता। मन ही मन में वह अपने भाई को अच्छा कहने लगी और उसके प्रति सकारात्मक भाव से धन्यवाद किया।

भाई ने भी पेपर किया और घर आते-आते सोचने लगा– मैंने बहन की बात क्यों नहीं मानी। बेकार में ही उसकी बात का विरोध किया। अगर मैं बहन की बात मान लेता तो क्या फर्क पड़ जाता।

दोनों ने घर में इकट्ठे ही प्रवेश किया और दोनों ने एक-दूसरे का मुस्कुराकर अभिवादन किया और एक साथ बोल पड़े– आप जैसा कहते हो मैं वैसा ही मान लूंगा अथवा मान लूंगी।

यहाँ पर गौर करने योग्य बात यह है कि जब भी हमारे मन में किसी के प्रति उचित और शुभ विचार आते हैं तथा उसके पास वैसी ही भावना लेकर पहुँचते हैं तो उसकी भावना में भी परिवर्तन ला देते हैं। वह भी अपने शुद्ध भाव से प्रत्युत्तर देता है। इसी तरह हम किसी को भी जो हमारे मित्र नहीं भी हैं या जिनसे हमारा मनमुटाव है, उनको भी अगर हम हृदय से, प्रेम से युक्त होकर शुभभावना अपने मन से भेजेगें तो वह उसके पास जाकर उनका भी हृदय परिवर्तन कर देगी। इस प्रकार उनके अन्तर्मन से सभी अनुचित भाव समाप्त हो जाएंगे। अन्ततः जीवन जीने का नया अध्याय प्रारम्भ हो जाएगा।

प्यारे साथियों! हम भी इस युक्ति को अपनाकर देखें और अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाएं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 166

गुरमुख आज्ञा सत कर मन्ने ते मनमुख इनकार करे।
गुरमुख गुर दी टहल कमावे ते मनमुख तकरार करे।
गुरमुख दिलों मुहब्बत करदा मनमुख उपरों प्यार करे।
गुरमुख अंदरों बाहरों इक्को मनमुख विच्चों खार करे।
गुरमुख दा नकदी सौदा मनमुख झूठ विहार करे।
गुरमुखां दा पक भरोसा मनमुख न इतबार करे।
गुरमुख हर थां रब नूं वेखे मनमुख न दीदार करे।
गुरमुख नेड़े माण नहीं आउंदा ते मनमुख हंकार करे।
रूप दुहां दे इक्को भावें पर विच्चों ने वखो वख।
कहे अवतार उपकारी गुरमुख मनमुख ऐवें मारन झख।

भावार्थ : बाबा अवतार सिंह जी उपरोक्त पद में गुरमुख की विशेषताओं के बारे में समझाते हुए बता रहे हैं कि गुरमुख गुरु की हर आज्ञा को सत्वचन कहकर स्वीकार करता है जबकि मनमुख आज्ञा मानने से इन्कार करता है। गुरमुख और मनमुख दोनों इन्सान ही होते हैं। ऊपर से देखने में दोनों नजर भी एक जैसे आते हैं। दोनों में अन्तर यह होता है कि जिसका मुख गुरु की ओर है वह गुरमुख और जिसका मुख अपने मन की ओर है वह मनमुख है। गुरमुख और मनमुख दोनों होते इन्सान ही हैं लेकिन गुरमुख टहल कमाता है, सेवा में लगता है और मनमुख व्यर्थ की तकरार में ही समय गंवाता है। गुरमुख का प्यार हृदय से होता है जबकि मनमुख केवल ऊपरी दिखावे का प्यार करता है। गुरमुख अन्दर-बाहर से एक समान होता है जो उसके मन में होता है; वही उसकी जुबान पर भी होता है जबकि मनमुख के अन्दर जलन-ईर्ष्या वाला भाव होता है। अपने इन्हीं स्वभावों, व्यवहारों के कारण गुरमुख का सौदा नगदी वाला कहलाता है अर्थात् उसके लिए इस हाथ दे उस हाथ ले वाली स्थिति होती है जबकि मनमुख हमेशा झूठ में ही विचरण करता है। गुरमुख अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास रखता है, उसे गुरु पर पक्का भरोसा होता है लेकिन मनमुख का विश्वास कच्चा होता है, वह गुरु के वचनों पर पूरी तरह एतबार नहीं करता।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरु पर पूर्ण विश्वास रखते हुए गुरमुख कण-कण में परमात्मा के दर्शन करता है और मनमुख सर्वत्र प्रभु के दर्शन करने में असफल रहता है। गुरमुख परमात्मा को अंग-संग देखते हुए कभी अपने मन में मान नहीं लाता जबकि मनमुख हमेशा अहंकार से ही घिरा रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी फरमाते हैं कि यद्यपि गुरमुख और मनमुख दोनों के रूप देखने में एक जैसे नजर आते हैं लेकिन अन्दर से दोनों ही अलग-अलग होते हैं। गुरमुख अपना जीवन परोपकार करते हुए व्यतीत करते हैं जबकि मनमुख झख मारते हैं अर्थात् अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ में गंवाकर एक दिन संसार से खाली हाथ चले जाते हैं।

दो बाल कविताएं : सुकीर्ति भटनागर

मिल के रहें

एक डाल पर तोता बैठा,
एक डाल पर चिड़िया।
एक डाल पर चढ़ी गिलहरी,
शैतानी की पुड़िया।।

एक डाल पर तितली बैठी,
रंग-बिरंगी सुन्दर।
एक डाल पर काला कौआ,
एक डाल पर बन्दर।।

सदा प्यार से रहते हैं वे,
उनका तो निर्मल मन।
दु:ख-सुख आपस में बांटें,
है सुखद बड़ा जीवन।

बच्चों हम भी मिल के रहें,
सहज भाव इस जग में।
शांत, सरल जीवन हो तो,
पुष्प खिलें हर पग में।

बातें

बातें कुछ होती हैं बच्चों,
फूलों जैसी प्यारी।
कुछ होतीं शूलों जैसी,
लगती खारी-खारी।।

कुछ बातें ममता सी मीठी,
खुशियों से भर जातीं।
कुछ पीड़ा से भर देती हैं,
मन में रोष जगातीं।।

बातें तो बातें होती हैं,
पर कटु वचन न भाते।
मीठे बोल लुभाते सबको,
सब अपने बन जाते।।

मानव एकता दिवस (24 अप्रैल) पर विशेष

बाबा गुरबचन सिंह जी के अमृत वचन

★ सेवा के साथ विनयशीलता बहुत जरूरी है।

★ जिसके पास सन्तोष धन है वही सच्चा धनी है।

★ सुमिरण से ही जीवन में स्थिरता आती है।

★ यदि बेटा अच्छा हो तो कुल का उद्धार होता है, परन्तु यदि बेटी अच्छी हो तो दो कुलों का उद्धार होता है।

★ यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सद्गुण धारण करें, उनका चरित्र व आचरण उत्तम हो, वे बड़ों का आदर करें तो यह काम पहले खुद करके दिखाने हैं।

★ बचपन में ही बच्चों को सेवा, सुमिरण, सत्संग के साथ जोड़ने का अर्थ है, उन्हें नेक व पावन इन्सान और अच्छे नागरिक बनाना। घर में आये सन्त-महात्मा की सेवा करते समय बच्चों को आगे करो, उनके हाथों से सेवा, सत्कार करवाने से वे भक्ति के यह गुण सहज में ही सीख जाते हैं।

★ हमारी सच्ची दौलत और सम्पत्ति हमारे बच्चे हैं। उन्हें अच्छी व सही शिक्षा देने की तरफ विशेष ध्यान देना है। ऐसी शिक्षा से ही देश, समाज और परिवार का कल्याण हो सकता है।

★ सेवा-सुमिरण-सत्संग ही वह तप-त्याग है जिसके द्वारा गुरसिख कर्ताभाव व भोक्ताभाव से बच सकता है।

★ ज्ञान केवल शब्दों तक सीमित नहीं जो कहा व सुना जा सके। ज्ञान असल में वह आत्मिक बोध है जो जीवन में परिवर्तन ले आये।

★ प्यास तो बेशक पानी से ही बुझती है परन्तु धन्यवाद हम पानी का नहीं बल्कि पिलाने वाले का ही करते हैं। इसी प्रकार भक्त का धन्यवाद सद्गुरु की सेवा द्वारा होता है।

★ सच्चा विद्वान वही होता है जो पढ़ते-पढ़ते अनुभव की भाषा बोलना शुरू कर दे।

★ रोशनी तो केवल रोशनी है जिसका कर्म अंधेरा दूर करना है परन्तु यदि बल्ब के ऊपर रंगीन कागज लपेट देते हैं तो रोशनी भी उसी रंग की ही दिखाई देती है। ठीक इसी तरह जब हम अपने विचारों को मनमत के पर्दे से ढक लेते हैं तो विवेक बुद्धि स्पष्टता से देखने व समझने में असमर्थ हो जाती है।

★ सद्गुरु का हर एक वचन अमृतरूपी संजीवनी है, जो मानने वालों के भाग्य के दरवाजे खोल देती है जीवन में नई शक्ति व प्राण फूकती है।

संकलन : हरजीत निषाद

ऐतिहासिक प्रसंग : विनेश जैन

बदला और बलिदान

बात उस समय की है जब दक्षिण भारत के सोमनाथ मन्दिर को लूटकर सुल्तान महमूद गजनवी वापस लौट रहा था। उसने लूट का बहुत-सा धन ऊँटों और घोड़ों पर लादा हुआ था। बहुत से सैनिक, घोड़ों पर व पैदल थे। बीच में सुरक्षित सैनिकों के साथ वह चल रहा था।

उसने सुना कि मार्ग के राजपूत राजा उससे सोमनाथ का बदला लेने की योजनाएं बना रहे हैं। उसका मुँह पीला पड़ गया। उसने अपने काफिले को सिंध की ओर मोड़ दिया। वहाँ भी सिन्ध नरेश ने उसका मार्ग रोक लिया। तब घबराकर वह कच्छ की ओर मुड़ गया किन्तु वहाँ भी जब कच्छ के जागीरदारों ने तलवारों से उसका स्वागत किया तो विवश होकर वह महारण (राजस्थान) में घुस पड़ा। महारण में उन्हें न तो वनस्पति मिली न ही पानी। तीन सौ मील तक चारों ओर रेत ही रेत। सुल्तान का काफिला इन अनजान राहों में पथ-भ्रष्ट हो गया और इधर-उधर भटकने लगा।

महारण के मध्य में एक छोटा-सा देवी का मन्दिर था। उसके पास ही दो-तीन टूटी-फूटी सी झोंपड़ियां थीं। इन्हीं में से एक झोंपड़ी के आगे एक युवक खड़ा था। सुल्तान की फौजों को वह देख रहा था। भूखी-प्यासी फौज इसी ओर बढ़ी आ रही थी।

"कौन है तू? कहाँ रहता है?" युवक ने देखा एक घुड़सवार सैनिक उसके सामने खड़ा पूछ रहा है।

"मैं? मैं भूमिया हूँ, यही महारन में रहता हूँ।"

"यहाँ के रास्ते जानता है? हमें रास्ते दिखा सकता है।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं।"

"तो चल हमारे साथ और यह ले तेरी उजरत (मेहनताना)।" कहते हुये उसने मोहरों से भरी एक थैली उस युवक के सामने फेंकी।

"कितने दिन की राह है," सैनिक ने पूछा।

"यही कोई दस-बारह दिन की।" उसने कहा और वह युवक रास्ता दिखाने के लिये महमूद के काफिले के पास चला गया।

महमूद का काफिला आगे बढ़ा, सबसे आगे वही युवक था। काफिला चलता गया-चलता गया। पूरे पन्द्रह दिन बीत गये। किन्तु रेगिस्तान का कोई अन्त नजर नहीं आ रहा था। सुल्तान की सेनाएं भूख और प्यास से अधमरी हो रही थीं।

"कब तक हम इस रेत के समुन्दर से पार हो सकेंगे अजनबी।" महमद ने हताश स्वर में पूछा।

''कभी नहीं सुल्तान'' युवक ने अपनी ऊँटनी को रोका और नीचे उतरते हुए कहा।

''क्या कहा, तू जानता है, मैं कौन हूँ।'' महमूद चौंक पड़ा।

''गजनी के सुल्तान महमूद को भला कौन नहीं जानता।'' युवक ने अपनी मस्ती में उत्तर दिया। वह आगे बोला, ''जिसने कोटि-कोटि भारतीयों की धार्मिक भावनाओं को आहत कर अपने पैरों तले रौंदकर भगवान सोमनाथ के पावन ज्योतिलिंग को खण्डित किया है। उसे भला कौन ऐसा भारतीय होगा जो नहीं जानता।''

''तू कौन है?'' महमूद चीख पड़ा।

''मैं?'' युवक ने हँसते हुए उत्तर दिया, ''मैं भगवान सोमनाथ का एक अकिंचन पुजारी। मैं मरने से नहीं डरता महमूद। मैंने तुझसे सोमनाथ के अपमान का बदला लिया है, अब तुम इसी रेगिस्तान में भटकते हुए मरोगे।''

युवक का वाक्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि महमूद और उसके सैनिकों की चमचमाती कई तलवारें एक साथ उसके शरीर पर पड़ीं और वह टुकड़े-टुकड़े होकर वहीं मरुभूमि में बिखर गया। महमूद किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा अपने सामने दूर-दूर तक फैले हुए रेगिस्तान को देख रहा था।

ऐसे ही जीवन के निर्मोही व्यक्तियों ने ही भारत के गौरवशाली इतिहास का निर्माण किया है। हमें सदा ऐसे वीर पुरुषों पर गर्व रहेगा।

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

जल ही जीवन है इस जग में ...

मछली मेंढक कछुए गेंडे, पानी पर हैं आश्रित।
पौधे लता बेल फसलें सब, जल पर हैं आधारित।
जल बिन बचती न हरियाली, मुरझाते उपवन हैं।
जल ही जीवन है इस जग में, जल ही जीवन है।

बादल मीठा जल बरसाते, जल अमृत सा होता।
पर गंदे नाले में जाकर, वह है दूषित होता।
तालाबों में संचित कर लो, बरस रहा सावन है।
जल ही जीवन है इस जग में, जल ही जीवन है।

जल न होगा तब क्या होगा, सोचो गहराई से।
जीवन की रक्षा करना है, सबको चतुराई से।
एक बूंद भी व्यर्थ न जाये, लेना यह प्रण है।
जल ही जीवन है इस जग में, जल ही जीवन है।

मीठे प्यारे माँ के बोल

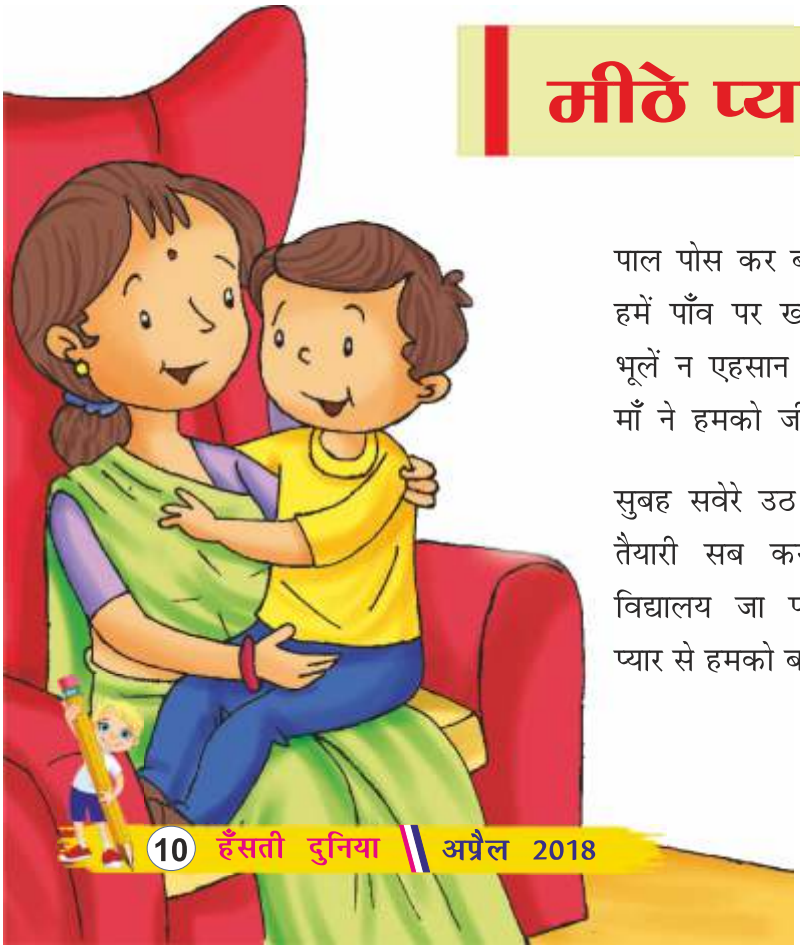

पाल पोस कर बड़ा किया।
हमें पाँव पर खड़ा किया।
भूलें न एहसान कभी हम,
माँ ने हमको जीवन दिया।

सुबह सवेरे उठ जाती माँ।
तैयारी सब करवाती माँ।
विद्यालय जा पढ़ो-लिखो,
प्यार से हमको बतलाती माँ।

खुद गीले में सोती माँ।
बच्चों को सुख देती माँ।
भूखी खुद रह जाए चाहे,
बच्चों को सदा खिलाती माँ।

कोई चुका सका न मोल।
माँ का प्यार बड़ा अनमोल।
माँ की कद्र करें दिल से,
मीठे प्यारे माँ के बोल

समाचार

फ्रैंकेंस्टीन रहस्यमयी आकाशगंगा

वॉशिंगटन। वैज्ञानिकों ने एक दुर्लभ 'फ्रैंकेंस्टीन' आकाशगंगा खोजी है जो धरती से करीब 25 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर है और संभवत: अन्य आकाशगंगाओं के हिस्सों से बनी है।

नए अध्ययन में आकाशगंगा 'यूजीसी-1382' के बारे में नए खुलासे किए गए हैं। पहले वैज्ञानिकों का मानना था कि यह एक पुरानी, छोटी और दूसरी आकाशगंगाओं की तरह एक आकाशगंगा है। बाद में इसका अध्ययन नासा के टेलिस्कोपों और अन्य वेधशालाओं के आंकड़ों का उपयोग किया गया और पता चला कि यह आकाशगंगा अनुमान से 10 गुना अधिक बड़ी है और दूसरी आकाशगंगाओं की तरह नहीं है। इसका अंदरूनी हिस्सा बाहरी हिस्से की तुलना में नया है और कुछ इस तरह का है मानो वह बचे हुए हिस्सों से बना है।

अमेरिका स्थित 'कार्नेजी इस्टीट्यूशन फॉर साइंस' के मार्क सैबर्त के अनुसार– 'यह इतनी सुकुमार है कि अन्य आकाशीय ग्रहों का मामूली सा टहोका भी इसे विघटित कर देगा।' सैबर्त और पेन्सिलवानिया स्टेट यूनिवर्सिटी में स्नातक के छात्र ली हेजन ने तारों के निर्माण की प्रक्रिया का पता लगाते समय अचानक ही इस आकाशंगगा को खोज लिया। उन्होंने पाया कि करीब 7,18,000 प्रकाशवर्ष दूर स्थित 'यूजीसी-1382' हमारी आकाशगंगा 'मिल्की वे' से सात गुना अधिक चौड़ी है। ज्यादातर आकाशगंगाओं में अंदरूनी हिस्सा सबसे पहले बनता है जहाँ पुराने तारे होते हैं। जैसे-जैसे आकाशगंगा विकसित होती जाती है इसका बाहरी हिस्सा विकसित होता जाता है। बाहरी हिस्से में नये तारे होते हैं। लेकिन 'यूजीसी-1382' के साथ ऐसा नहीं है। **(भाषा)**

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

बाल कहानी : अनिता जैन

अनूठा न्याय

बहुत दिन हुए, हमारे देश की जूनागढ़ रियासत में एक बुद्धिमान व न्यायप्रिय राजा यशदेव राज्य करता था। राजा यशदेव अपने निष्पक्ष व अनूठे न्याय के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। उसकी न्यायप्रियता की वजह से पूरी रियासत में सम्पन्नता और समृद्धि थी। प्रजा सुखी व प्रसन्न थी।

इसी रियासत में एक तेली रहता था। बहुत ही मेहनती और ईमानदार। वह दिन-रात मेहनत करता था। अपनी आमदनी में से थोड़ी-थोड़ी बचत कर उसने चांदी के सिक्के जमा कर लिए। एक बार तेली को जरूरी काम से उसके घर से बाहर जाना पड़ा। उसके घर में और कोई था नहीं तथा चांदी के उन सिक्कों को उसने सूने घर में रखना उचित नहीं समझा। आखिर बहुत सोच-विचार के बाद उसने अपने दोस्त सेठ करोड़ीमल के यहाँ उन सिक्कों को रखने का निश्चय किया।

करोड़ीमल के पास वह चांदी के सिक्कों से भरी अपनी थैली रखकर अपने काम पर चला गया।

अपना काम निपटाकर सप्ताह-भर बाद तेली वापस लौट आया। अगले दिन वह अपने सिक्कों की थैली लेने सेठ करोड़ीमल के पास पहुँचा। चांदी के सिक्कों को देखकर करोड़ीमल की नीयत में फर्क आ गया था। उसने सोचा कि तेली को मुझे थैली देते हुए किसी ने नहीं देखा है और तेली के पास ऐसा कोई सबूत भी नहीं है, जिससे यह साबित हो सके कि उसने मुझे थैली दी थी। जब तेली करोड़ीमल के पास पहुँचा तो सेठ ने उसकी बहुत आवभगत की। इधर-उधर की कुछ बातें करने के बाद तेली ने अपनी थैली वापस मांगी। यह सुनकर करोड़ीमल ने तेवर बदलते हुए कहा, 'तुम होश में भी हो या नहीं? कौन-सी थैली? कब दी थी तुमने मुझे कोई थैली? कोई सबूत है तुम्हारे पास?'

तेली सेठ करोड़ीमल के इस जवाब के लिए कतई तैयार नहीं था। उसे अपने पैरों तले की जमीन खिसकती मालूम हुई। किसी तरह अपने को संभालते हुए तेली ने कहा, 'भाई तुम मेरे बचपन के दोस्त हो। मैं एक निर्धन आदमी हूँ। ऐसा दगा मेरे साथ न करो। मेरी थैली लौटा दो। तुम्हारे पास ऐसे भी दौलत की कोई कमी नहीं है। मुझ गरीब के चंद सिक्कों से तुम और ज्यादा धनवान नहीं बन जाओगे।'

तेली की इन बातों का सेठ करोड़ीमल पर कोई असर नहीं हुआ। उसने तेली को डपटते हुए कहा, 'तुमसे मैं कह चुका हूँ कि मेरे पास तुम्हारी कोई थैली नहीं है। तुम सीधी तरह यहाँ से दफा होते हो या नौकरों से धक्का दिलवाकर बाहर निकालूं?'

तेली बेचारा सिर नीचा कर उदास मन से वहाँ से लौट आया। उसने तय किया कि वह राजदरबार में राजा से इंसाफ की मांग करेगा।

अगले दिन तेली ने राजदरबार में पहुँचकर सारी दास्तान राजा यशदेव को सुनाई। राजा ने पूरे ध्यान से तेली की बात सुनी। फिर सेठ करोड़ीमल को दरबार में बुलवाया। उसने सेठ से पूछा, 'क्या तेली का कथन सच है?' तब सेठ करोड़ीमल ने कहा, 'नहीं यह तेली झूठ बोल रहा है। इसने कोई सिक्कों की थैली मुझे नहीं दी थी।' राजा के सामने असमंजस की स्थिति बन गई। दरबारियों के मत भी परस्पर विरोधी थे। कुछ दरबारियों के अनुसार तेली का कहना सही था और कुछ का मानना था कि सेठ करोड़ीमल सच्चा है।

राजा ने कुछ सोचकर सेठ करोड़ीमल की तिजोरी की तलाशी के आदेश दिए। तत्काल तिजोरी की तलाशी ली गई। तिजोरी से बरामद रुपयों की अनेक थैलियों में से अपनी थैली खोजने के लिए राजा ने तेली से कहा। तेली ने

अपनी थैली ढूंढकर राजा को थमा दी। यह देखकर सेठ करोड़ीमल बोला, 'राजन यह तेली झूठा है। सब थैलियां मेरी हैं।'

राजा ने सेठ करोड़ीमल के चीखने-चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने साफ बर्तन में पानी मंगवाया। पानी आ जाने पर राजा ने उस थैली के सारे सिक्के पानी में डाल दिए। कुछ ही समय में सिक्के पानी में बैठ गए और पानी के ऊपर तेल की कुछ बूंदें तैर आईं। राजा ने झट से फैसला सुना दिया। उसने सेठ करोड़ीमल को कारावास की सजा सुना दी और तेली को उसके चांदी के सिक्के थैली में भरकर लौटा दिए।

राजा के इस फैसले को सुनकर दरबारी हैरत में पड़ गए। तब राजा ने कहा, 'इसमें अचरज की भला क्या बात है? तेली के सिक्के थे, इसलिए पानी में पड़ते ही उसके हाथों से लगा तेल ऊपर तैर आया। अगर यह सिक्के सेठ करोड़ीमल के होते तो उन पर तेल न लगा होता। विश्वास न हो तो देख लो।' राजा ने पानी से भरा एक और बर्तन मंगवाया और उसमें सेठ की दूसरी थैली के सिक्के डाले, लेकिन इस बार तेल ऊपर नहीं आया।

आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

क्यों करती हैं मधुमक्खियां नृत्य

मधुमक्खियों का नृत्य संवाद संप्रेषण (भेजना) का एक मुख्य तरीका है। इसके जरिए वे अन्य मधुमक्खियों को कई तरह के संदेश प्रदान करती हैं। जैसे भोजन का स्रोत किस दिशा में है और छत्ते से कितनी दूर पर है तथा स्रोत में कितना भोजन उपलब्ध है।

जो मक्खियां पराग की खोज में जुटी हैं, वे एक विशेष किस्म के नृत्य से अन्य मधुमक्खियों को इसकी सूचना देती हैं। जब इन्हें काफी मात्रा में पराग मिल जाता है, तो ये मंडल नृत्य (गोल घेरे में) करती हैं जिसका अर्थ है इन्होंने पराग पा लिया है।

अगर फूलों के आसपास मंडराते समय मधुमक्खियों को खतरे का आभास होता है, तो वे अपने ही अंदाज में अपने साथियों को खतरे के प्रति आगाह कर देती हैं। खतरे से आगाह करने के लिए वे खास किस्म का डांस करती हैं।

वैज्ञानिकों को इस बात का तब पता चला जब उन्होंने कुछ फूलों के पास मरी हुई मक्खी रख दी। फिर अध्ययन किया कि वहाँ आने वाली अन्य मधुमक्खियां खतरे के प्रति क्या प्रतिक्रिया देती हैं। अध्ययन से पता चला कि खतरे को भांपते ही वे एक अनोखे नृत्य 'वैगल डांस' के जरिए दूसरी मधुमक्खियों तक सन्देश पहुँचा देती हैं कि आगे खतरा है। जब मधुमक्खियां अपने छत्ते की ओर वापस आती हैं तो ये एक जटिल किस्म का नृत्य करती हैं।

वैज्ञानिकों ने इस पर एक नया प्रयोग किया। मधुमक्खियों को दो कृत्रिम फूलों के पास भेजा गया, इनमें एक समान खाना उपलब्ध था। एक फूल पर दो मरी हुई मधुमक्खियों को भी रख दिया गया ताकि आने वाली मधुमक्खियां इसे देख सकें। वैज्ञानिकों ने पाया कि जब मधुमक्खियां ऐसे फूलों के पास से वापस आती हैं जहाँ से उन्हें भरपूर खाना मिलेगा तो वे 20 से 30 बार ज्यादा डांस करती हैं जबकि अगर उन्हें लगता है कि फूलों के आसपास मकड़ियों आदि के जाल में फंसने का खतरा है तो वे छत्ते पर लौटकर ऐसा नहीं करती हैं यानी मधुमक्खियां ये पता लगा लेती हैं कि कुछ फूलों के पास जाना खतरनाक हो सकता है और वे खतरे का ये संदेश अपने वैगल डांस के माध्यम से दूसरे साथियों को भी देती हैं।

नींद न मिलने पर मधुमक्खियों का व्यवहार प्रभावित होता है। परीक्षण के दौरान उन्होंने मधुमक्खियों के शरीर पर चुंबकीय चकली लगा दी। छत्ते के पास एक चुंबक को लगातार गति में रखने के कारण वे सो नहीं पाती थीं। यह देखा गया है कि चुंबकीय चकली वाली बाद में अपने नृत्य के द्वारा भोजन स्थल की दिशा बताने में असमर्थ रही। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि उन्हें नींद से वंचित रखा जाए तो वे अच्छी तरह नृत्य नहीं कर पातीं।

ऐतिहासिक कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

रानी रूपसुन्दरी का आदर्श

कई सौ साल पहले की बात है। उस समय गुजरात की राजधानी पंचासर थी। वहाँ का राजा था– जयशेखर।

जयशेखर एक लोकप्रिय राजा था। प्रजा उससे सदैव खुश रहा करती। उसके गुणों को सराहती भी। राजा भी प्रजा की सुख-सुविधाओं का खूब ख्याल रखता। हर समय उसके हित की बात सोचता। मतलब कि उस समय राजा-प्रजा का आपसी सम्बन्ध बहुत अच्छा था।

निकट ही एक पड़ोसी राज्य था– भुवड़। वहाँ का राजा जयशेखर की लोकप्रियता से जलता ही नहीं था बल्कि पंचासर की सुख-संपन्नता भी उसे फूटी आँखों नहीं सुहाती। उसकी नीयत भी ठीक नहीं थी। वह पंचासर राज्य को हड़पने का मंसूबा बांधा करता। अवसर ढूंढता।

अवसर पाकर एक बार भुवड़ राज्य के राजा ने अचानक पंचासर पर आक्रमण कर दिया। जयशेखर को स्थिति समझने में देर नहीं हुई। उसने तुरन्त आक्रमण का विरोध किया। डटकर दोनों में लड़ाई हुई। इस लड़ाई में राजा जयशेखर ने अपनी वीरता और शौर्य का अनूठा परिचय दिया। मगर विधाता को कुछ और ही स्वीकार था। वही हुआ। राजा जयशेखर इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए। यह खबर एक सैनिक ने तुरन्त महल में जाकर रानी को दी, "युद्ध में लड़ते हुए हमारे राजा ने वीरगति प्राप्त की।"

खबर सुनकर रानी रूपसुन्दरी तनिक भी विचलित नहीं हुई। वह उस समय गर्भवती थी। अतएव उसने तुरन्त महल छोड़ दिया और वन की ओर जा निकली। वन के एक आश्रम में रानी रूपसुन्दरी ने शरण ली। समय पर वहाँ उसने एक तेजस्वी और सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। चूंकि पुत्र ने वन में जन्म लिया था, अतएव उसका नाम पड़ा– वनराज।

शुरू से ही रानी रूपसुन्दरी अपने पुत्र को ऐसी शिक्षा देने लगी कि आगे चलकर वह एक सफल राजा सिद्ध हो सके। अतएव उसे न केवल वीरों की कहानियां ही सुनाती अपितु अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी देती। वीरतापूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित भी करती।

अक्सर वह उसे याद दिलाती, तुम्हें अपने को ऐसा बनाना है कि पिता का खोया हुआ राज्य वापस ले सको। उनसे ज्यादा लोकप्रिय राजा बनकर दिखाओ। पिता के नाम को रोशन करो।

"मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ, माँ। मुझे आत्मविश्वास है कि एक दिन मैं जरूर तुम्हारी आशा-आकांक्षा को पूरा सकूंगा।" वनराज माँ को भरोसा देता।

कालक्रम में वनराज बड़ा होता चला। रानी रूपसुन्दरी ने उसे पंचासर की पराधीनता की पूरी कहानी कह सुनायी। कहानी सुनकर वनराज ने वन के भीलों और पंचासर के स्वाभिमानी एवं देश प्रेमी युवकों को एकत्रित किया। जल्द एक सैनिक दल उसने तैयार कर लिया। फिर अवसर देख-पाकर वनराज ने भुवड़ राज्य पर अचानक चढ़ाई कर दी।

घमासान युद्ध हुआ। वनराज ने अपनी वीरता और शौर्य का ऐसा परिचय दिया कि भुवड़ सैनिकों के छक्के छूट गए। भुवड़ का राजा हार गया। वह सपरिवार बन्दी बनाकर वनराज के सामने लाया गया। वनराज ने भुवड़ के राजा से पूछा, ''आपने बिना वजह पंचासर पर चढ़ाई कर जो अपराध किया था और जिसकी वजह से राजपरिवार को दुर्दिन देखना पड़ा, क्या आज आपके और आपके परिवार के साथ वैसा ही व्यवहार करना उचित होगा?''

भुवड़ के राजा का सिर शर्म से नीचे झुक गया। उसे कोई उचित जवाब नहीं सूझा। इस बीच रानी रूपसुन्दरी वहाँ आकर वनराज से बोली, ''बेटा, मैं नहीं चाहती हूँ कि जो दुर्दिन मुझे देखना पड़ा पराधीनता के दिनों में, वह किसी भी राजपरिवार की स्त्रियों-बच्चों को देखना पड़े। यह वैसे भी हमारी संस्कृति के प्रतिकूल है– असुर संस्कृति है जो क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध है। अतएव इन्हें आदर के साथ छोड़ दिया जाए।''

''बहुत खूब।'' वनराज हँसा, ''माँ, तुम बहुत दयालु हो। शत्रु के साथ तुम्हारा ऐसा व्यवहार एक आदर्श ही तो है। मैं तुम्हारी बातों का अक्षरशः पालन करूंगा।''

तत्क्षण बन्दी राजपरिवार को ससम्मान छोड़ दिया गया। उसके बाद रानी रूपसुन्दरी ने वनराज से कहा, ''बेटा, तुम्हें एक काम और करना है।''

''कहो माँ।''

''जिस आश्रम में हमने पिछले कई साल

गुजारे, उन आश्रमवासियों के प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य हैं। उनके उपकारों को हमें नहीं भूलना चाहिए।''

''बिल्कुल नहीं,'' वनराज बोला। ''आज ही मैं उन आश्रमवासियों को उचित राज-सम्मान देकर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करूंगा। उनकी समस्याओं को दूर करने पर भी ध्यान दूंगा।''

''तुमसे ऐसी ही आशा थी बेटा।'' रानी रूपसुन्दरी खुश होकर वनराज से बोली।

स्व-शिक्षा

बन्दर ने केला खाया,
और छिलका फेंक दिया।
पैर फिसला और सिर फूटा,
सफाई का ध्यान आया।

– डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा (ग्वालियर)

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

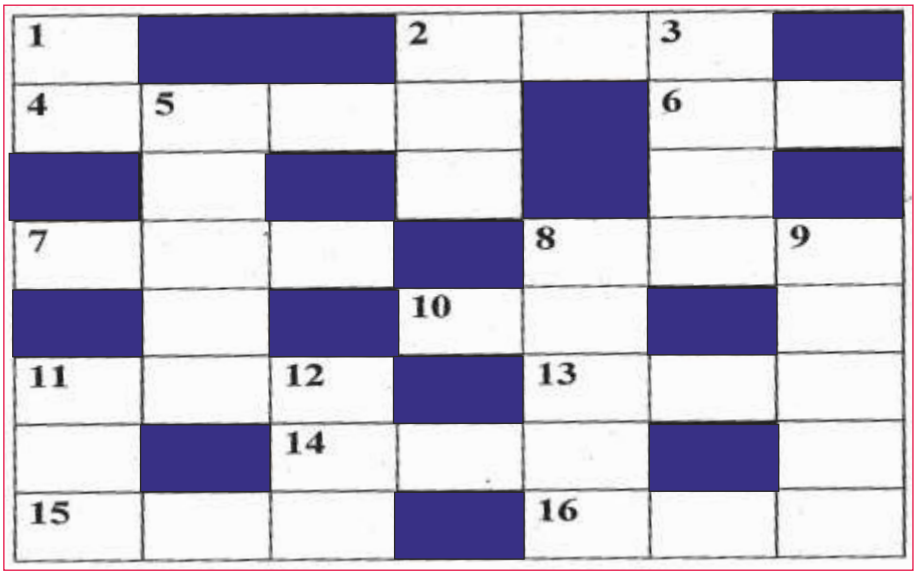

बाएं से दाएं

2. जलज और जलद में से जो बादल का एक पर्यायवाची शब्द है।
4. आपकी दादी आपकी नानी की क्या लगती है?
6. मित्र का विपरीत शब्द।
7. शुद्ध शब्द छांटिए : दयालू/दयालु
8. सद्दाम हुसैन जिस देश के राष्ट्रपति थे।
10. एटा और कोटा में से जो शहर उत्तर प्रदेश में है।
11. सफेद रंग का नमकीन पदार्थ जिसका रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड है।
13. सन्त निरंकारी मंडल एक पाक्षिक पत्र प्रकाशित करता है, जिसका नाम है : 'एक ... ।'
14. चीन के जिस शहर का पुराना नाम पेकिंग था।
15. बेमेल शब्द छांटिए : लकीर, लंगूर, सियार, तीतर।
16. रस से भरा यानि .... ।

ऊपर से नीचे

1. एक खंभे का आधा भाग पानी में है और बाकी दस मीटर पानी से ऊपर है। खंभे की लम्बाई कितने मीटर है?
2. सीता जी के पिता का नाम।
3. दीवाली से पहले आने वाला एक त्योहार।
5. केरल में बोली जाने वाली मुख्य भाषा।
8. अरुणाचल प्रदेश राज्य की राजधानी।
9. पंजाब के जिस शहर में रेल कोच फैक्ट्री है।
11. असल का विपरीत शब्द।
12. जिस पुरातन सन्त की पत्नी का नाम लोई था।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

प्रेरक कहानी : ईलू रानी

नम्रता ही स्वर्ग है

एक महात्मा अपने आश्रम के द्वार पर बैठकर भगवान के चिंतन में लगे हुए थे। तभी उनके सामने एक योद्धा उपस्थित हुआ। उसने पहुँचते ही महात्मा से प्रश्न किया– महात्मा जी! क्या सचमुच स्वर्ग और नरक की कोई चीज है?

महात्मा बड़े ध्यान से उस योद्धा को पैर से लेकर सिर तक देखने लगे। वे उसे देखकर कुछ क्षणों तक मन ही मन सोचते रहे। फिर उसकी ओर एक नजर देखकर बोल उठे– तुम्हारा पेशा क्या है?

योद्धा ने सगर्व उत्तर दिया– मैं सैनिक हूँ, योद्धा हूँ।

यह सुनते ही महात्मा ने बड़े आश्चर्य के साथ कहा– 'तुम और योद्धा।' महात्मा कहने के साथ ही हँस पड़े।

योद्धा की भौंहें टेढ़ी हो गईं। उसने महात्मा की ओर देखते हुए कहा– हाँ मैं एक योद्धा हूँ। पर आप हँसे क्यों?

महात्मा ने कहा– मैं इसलिए हँसा कि तुम और तुम्हारी शक्ल तो बिल्कुल भिखारियों के समान है। कौन ऐसा मूर्ख राजा है जिसने तुम्हें अपनी सेना में स्थान दिया है।

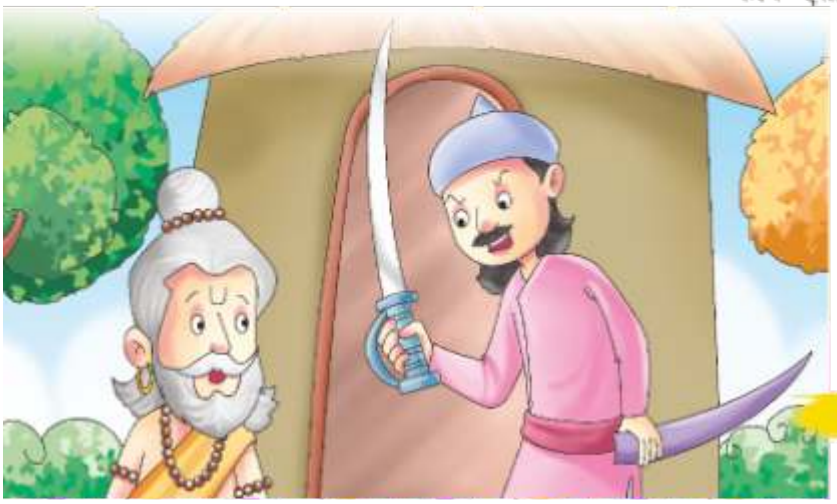

योद्धा का चेहरा क्रोध से लाल-पीला हो उठा। उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा पड़ा।

महात्मा उसकी ओर देखते हुए पुनः बोले– अच्छा, तुम तलवार चलाना भी जानते हो?

योद्धा आपे से बाहर हो गया था। वह म्यान के भीतर से झटके के साथ तलवार खींचने लगा।

महात्मा ने अपना कथन जारी रखा– तुम्हारी तलवार भोथरी (कुंद) है। इससे मेरा सिर न कट सकेगा।

योद्धा क्रोध से उन्मत्त होकर तलवार म्यान से खींचकर अपने हाथ में ले ली। वह महात्मा का सिर काटने के लिए उद्यत हो उठा।

महात्मा मुस्कुराते हुए बोल उठे– लो देखो, तुम्हारे लिए नरक का द्वार खुल गया है।

योद्धा महात्मा के आत्म-संयम को देखकर अत्यन्त चकित हो गया। उसने तलवार म्यान में रख ली और महात्मा के सामने मस्तक झुका दिया।

महात्मा बोल उठे– देखो अब तुम्हारे लिए स्वर्ग का द्वार खुल गया।

–सचमुच क्रोध ही नरक और नम्रता ही स्वर्ग है। स्वर्ग जैसा आनन्द वे ही प्राप्त करते हैं जो क्रोध को जीतकर नम्रता अपनाते हैं। इससे विपरीत जो क्रोध करते हैं, उन्हें तो जीते-जी नरक जैसा जीवन जीना पड़ता है।

दवाई से कम नहीं पानी

जानकारी : विभा वर्मा

बच्चों, क्या तुमने महसूस किया है कि मानव, पशु–पक्षी भोजन के बिना तो कुछ समय के लिए जीवित रह सकते हैं पर पानी के बिना तो अधिक समय तक तो कतई नहीं जी सकते।

दिन शुरू होते ही प्रातः से ही जल की आवश्यकता शुरू हो जाती है।

भोजन के तुरन्त बाद जल नहीं पीना चाहिए। नहीं तो शरीर मोटा हो जाता है और न ही भोजन के शुरू में ही जल का सेवन करें। इससे भोजन का पाचक रस पतला हो जाता है। उचित समय आधा भोजन के बीच में दो–तीन घूट जल पीना ठीक रहता है। अतः भोजन के न तो प्रारम्भ में और न ही अन्त में अधिक जल पीना चाहिए क्योंकि ऐसे अगर जल लिया जाए तो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अत्यधिक मात्रा में पानी पीया जाए तो भोजन जल के मिश्रण से कीचड़ सदृश्य रूप ले लेता है और ऐसी स्थिति में आमाशय में पहुँचने वाला पित्ताशय से पाचक रसों का प्रभाव भोजन पर सुचारु रूप से नहीं होता। जिससे पाचन क्रिया बिगड़ जाती है। बदहजमी गैस सम्बन्धी विकारों का जन्म हो जाता है।

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

तमिलनाडु का राजकीय पशु

नीलगिरि ताहर

ताहर एक प्रकार का पहाड़ी बकरा है। वास्तव में यह भेड़ और बकरे दोनों का ही निकट सम्बन्धी है, किन्तु इसमें इन दोनों से अलग कुछ ऐसी विलक्षण विशेषताएं पायी जाती हैं जो न भेड़ों में मिलती हैं और न ही बकरों में मिलती हैं। इसीलिए इसे सामान्य भेड़ों और बकरों से अलग समझा जाता है। विश्व में ताहर की तीन जातियां पायी जाती हैं– अरबी ताहर, हिमालयी ताहर और नीलगिरि ताहर। भारत में हिमालयी ताहर और नीलगिरि जातियां पायी जाती हैं।

हिमालयी ताहर एक पहाड़ी बकरा है। इसका वैज्ञानिक नाम हिमिट्रेगस जेमलाहिकस है। यह हिमाचल प्रदेश गढ़वाल, कुमांऊ और भूटान के पर्वतीय भागों में 3000 मीटर से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है। हिमालयी ताहर ऊँचे वृक्षों वाले पहाड़ी ढालों पर रहना अधिक पसन्द करता है। यह सर्दियों के मौसम में ठण्डक अधिक पड़ने पर नीचे उतर आता है और सर्दियां समाप्त होते ही वापस पर्वतीय वनों में लौट जाता है। स्थानीय लोग इसे 'थार' कहते हैं।

हिमालयी ताहर का शरीर बड़ा स्वस्थ और गठा हुआ होता है एवं इसके पैर बड़े मजबूत होते हैं। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 90 सेंटीमीटर से 105 सेंटीमीटर तक एवं वजन 90 किलोग्राम तक होता है। हिमालयी ताहर के शरीर के रंगों में पर्याप्त विविधता पायी जाती है, किन्तु अधिकांश के शरीर का रंग गहरा कत्थई होता है तथा इनके चेहरे का रंग शरीर के रंग से भी गहरा होता है। हिमालयी ताहर की गर्दन और कंधों पर काफी घने और लम्बे बाल होते हैं, जो इसके घुटनों तक पहुँच जाते हैं। इसके बालों का रंग प्रायः लाली लिये हुए भूरा होता है। हिमालयी ताहर के कान पतले और सीधे होते हैं तथा हमेशा खड़े रहते हैं। इसके सींगों का रंग काला होता है तथा ये बड़े मजबूत होते हैं और पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। हिमालयी ताहर के सींगों की लम्बाई लगभग 30 सेंटीमीटर होती है, किन्तु कभी-कभी 40 सेंटीमीटर तक लम्बे सींग वाले हिमालयी ताहर भी देखने को मिल जाते हैं। इनमें मादा का आकार नर से छोटा होता है। इसका वजन 30 किलोग्राम से 40 किलोग्राम तक होता है। मादा हिमालयी ताहर के सींग भी छोटे होते हैं।

हिमालयी ताहर हिमालय के सर्वाधिक दुर्गम स्थानों पर रहता है। यह पथरीली ढलानों, घने जंगलों, ऊँचे-ऊँचे वृक्षों, घनी झाड़ियों, ऊँची-नीची विशाल चट्टानों आदि के पास ऐसे स्थानों पर अपना आवास बनाता है, जहाँ इसे पूरी सुरक्षा मिलती है। यही कारण है कि यह अभी तक विलुप्त होने से बचा हुआ है।

ताहर की एक और महत्वपूर्ण जाति है– नीलगिरि ताहर। इसे हिमालयी ताहर का दक्षिण भारतीय प्रतिरूप कहा जा सकता है। यह दक्षिण भारत में पाया जाने वाला एकमात्र पहाड़ी बकरा है। नीलगिरि ताहर का वैज्ञानिक नाम हिमीट्रेगस हाइलोक्रियस है। स्थानीय लोग इसे 'वरैआहु' के नाम से पुकारते हैं। यही नीलगिरि ताहर तमिलनाडु का राज्य पशु है। नीलगिरि ताहर भी घने जंगलों, पहाड़ी ढलानों और ऊँची-नीची चट्टानों के मध्य

हिमालयी ताहर के समान अत्यन्त दुर्गम स्थानों पर रहता है, किन्तु यह हिमालयी ताहर से कम ऊँचे पर्वतीय भागों में अपना आवास बनाता है। नीलगिरि ताहर 1200 मीटर से लेकर 1800 मीटर तक की ऊँचाई वाले पर्वतीय जंगलों में रहना अधिक पसन्द करता है। किसी समय नीलगिरि की पहाड़ियों, अन्नामलाई की पहाड़ियों और पश्चिमी घाट के जंगलों में इसकी संख्या लाखों में थी, किन्तु नीलगिरि ताहर का इतना अधिक शिकार किया गया कि अब इसकी संख्या 400 से भी कम रह गयी है।

नीलगिरि ताहर झुंड में रहने वाला वन्यजीव है। इसके समूह में सदस्यों की संख्या 5 से लेकर 50 तक हो सकती है। कभी-कभी इसके झुंड में सदस्यों की संख्या 60 अथवा इससे भी अधिक हो जाती है, किन्तु इतने बड़े झुंड अब देखने को नहीं मिलते। नीलगिरि ताहर के झुंड में अर्धवयस्क नर, मादाएं और उनके

बच्चे साथ-साथ रहते हैं। हिमालयी ताहर के समान इनमें भी बड़े नर प्रायः घने जंगलों में अधिक दुर्गम स्थानों पर रहते हैं और अकेले ही विचरण करते हैं। ये कभी-कभी झुंड भी बना लेते हैं अथवा किसी झुंड में सम्मिलित हो जाते हैं, किन्तु गर्मियों के मौसम में इन्हें अकेले विचरण करते हुए ही देखा गया है।

नीलगिरि ताहर की कंधों तक की ऊँचाई 95 सेंटीमीटर से लेकर 110 सेंटीमीटर तक होती है। नीलगिरि ताहर की त्वचा खुरदरी होती है एवं इस पर छोटे-छोटे बाल होते हैं। इसकी पीठ, पुट्ठे एवं शरीर के ऊपर का भाग स्लेटी अथवा पीलापन लिये हुए कत्थई रंग का होता है तथा पेट और शरीर के नीचे का भाग मटमैला होता है। नीलगिरि ताहर की एक प्रमुख विशेषता यह है कि बढ़ती आयु के साथ ही साथ इसके शरीर का रंग इतना गहरा हो जाता है कि दूर से देखने पर यह काले रंग का दिखाई देता है। मादा ताहर नर से छोटी होती है एवं इसके शरीर का रंग भी नर के शरीर के रंग से हल्का होता है।

नीलगिरि ताहर के सींग आगे से गोलाई लिये हुए छोटे और शंक्वाकार होते हैं एवं पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। इनमें नर और मादा दोनों के सींग होते हैं। सामान्यतया नर और मादा दोनों के सींग बराबर होते हैं और देखने में एक जैसे लगते हैं।

नीलगिरि ताहर और हिमालयी ताहर की शारीरिक संरचना में अनेक भिन्नताएं पायी जाती हैं। इन दोनों में एक प्रमुख भिन्नता यह है कि मादा हिमालय ताहर के गाय के समान चार थन होते हैं जबकि मादा नीलगिरि ताहर के सामान्य बकरियों की तरह केवल दो थन होते हैं

महात्मा कन्फ्यूशियस ने अन्तिम समय में अपने शिष्यों को बुलाकर अन्तिम शिक्षा दी– देखो मेरे दाँत! मेरे जन्म के बाद आये पर पहले चले गये। जीह्वा शरीर के साथ आई पर अभी भी है। जानते हो क्यों? क्योंकि दाँत सख्त व अहंकारी थे व जीह्वा विनम्र व लचकदार है।

जानकारी : किरण बाला

विचित्र मछली कैटफिश

मछलियों का संसार बड़ा विचित्र है जिसमें तरह-तरह की मछलियां हैं। मध्य और पूर्वी अमेरिका में कैटफिश नामक मछलियां पाई जाती हैं। इनके मुँह के चारों तरफ चार जोड़े स्पर्शक (barbel) होते हैं जो कि बिल्ली की मूंछों के समान दिखाई देते हैं। शायद इसीलिए इसका नाम कैटफिश पड़ा।

कैटफिश की अनेक प्रजातियां हैं जिनमें फ्लैटहैड कैटफिश, नीली कैटफिश, विद्युत कैटफिश और वेल्स कैटफिश प्रमुख हैं। इनका आकार नौ फीट तक देखा गया है। इनका वजन भी काफी अधिक होता है। ये साफ पानी की सबसे बड़ी मछली है जो कि धीमी बहने वाली नदियों या झीलों की तलहटी में रहती हैं। ये अमेरिका के पूर्वी किनारे पर अटलांटिक सागर के पानी में भी मिलती है।

वैसे तो मछली द्वारा अंडे देना एक आम बात है। लेकिन यहाँ खास बात यह है कि मादा का काम केवल अंडे देना है, उनकी परवरिश करना नहीं। जैसे ही वह अंडे दे चुकती है, उसके सारे अंडे नर अपने मुँह में रख

लेता है। अंडों की संख्या करीब 50 होती है जिनका आकार संगमरमर के छोटे टुकड़ों जितना होता है। जब ये सारे अंडे उसके मुँह में समा जाते हैं तो इससे उसका मुँह पूरी तरह भर जाता है यानी वह कुछ खा पी नहीं सकता। एक महीने तक ये अंडे उसके मुँह में रहते हैं और फिर जब इनसे बच्चे बाहर निकलते हैं, तब ही वह कुछ खाने की स्थिति में होता है। बात यहीं समाप्त नहीं होती, अगले 15 दिनों तक बच्चे किसी खतरे के डर से उसके मुँह में तैरते रहते हैं। इतने दिनों तक वह अपने द्वारा पूर्व में संचित की गई ऊर्जा से काम चलाता है। है न, नर माता की महत्वपूर्ण भूमिका।

क्या आप जानते हैं?

- शतरंज का आविष्कार भारत में हुआ।
- बीजगणित, त्रिकोणमिति और फलन की उत्पत्ति भारत में हुई।
- भारत में दशमलव प्रणाली 100 ई. पू. में विकसित की गई।
- भारत में विश्व में सबसे ज्यादा डाकघर हैं।
- विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना 700 ई. पू. में की गई।
- पाई का मान सबसे पहले भारतीय गणितज्ञ बुद्धयान ने निकाला था।

संग्रहकर्ता : यशी हार्दिक सक्सेना (हरदोई)

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

आंगन में पेड़ लगाओ

बात पते की है खुद समझो,
और सबको समझाओ।
अगर चाहिये शुद्ध हवा,
आंगन में पेड़ लगाओ।।

धूल-धुआं जहरीली गैसें,
पी जाता है सारी।
शुद्ध ऑक्सीजन हमको देकर,
रक्षा करें हमारी।।

हरियाली को देख रोशनी,
तेज रहे आँखों की।
नरम दूब पर चलकर देखो,
थकन मिटे पांवों की।।

अपने सर पर धूप झेलकर,
सबको देता छाया।
अपना फल देता दूजों को,
खुद न कभी खाता।।

बाल कविता : मदन देवड़ा

वृक्ष लगायेंगे

पर्यावरण प्रदूषण के हित,
हम सब वृक्ष लगायेंगे।

कर्मवीर बन इस धरती को,
फिर से स्वर्ग बनायेंगे।

नई चेतना, नई योजना,
नये लक्ष्य अपनायेंगे।

गाँव-गाँव फैले खुशहाली,
ऐसी युक्ति लगायेंगे।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

एक बूंद की कीमत

''मगलू! आज तुमने फिर नल खुला छोड़ दिया।'' मगलू हिरण की माँ रोमी हिरणी कह रही थी– तुम नहा चुके तो तुरन्त नल बन्द कर देना चाहिए था। कितना पानी बहकर नाली में चला गया।

मगलू रोज कितना ही पानी बरबाद कर देता। सुबह ब्रुश करता तो पूरी रफ्तार से लगातार नल खुला छोड़ देता। खाना खाकर हाथ धोता तो नल बन्द नहीं करता। पानी बेकार बहता रहता।

माँ डांटती रहती, ''मगलू तुमसे कितनी बार कहा है कि पानी को बरबाद मत करो, पर तुम हो कि...''

–आपको माँ, क्या फर्क पड़ता है पानी ही तो बहा है, दूध तो नहीं बह गया।– मगलू हिरण बोला।

''तुम्हें खूब पानी मिलता है न, तभी तुम इसकी कीमत नहीं समझते हो। उन लोगों की सोचो जो एक-एक बूंद पानी के लिए तरसते हैं।'' माँ बड़बड़ाती हुई खाना बनाने में लग गई।

दोपहर का समय था। मगलू ने स्नानाघर में एक बड़ा-सा टब पानी से भर लिया और ऊपर नल चालू कर दिया। उसमें उछल-कूद करते हुए वह नहाने लगा।

जब काफी देर तक मगलू स्नानघर से बाहर नहीं आया तो उसकी माँ रोमी हिरणी वहाँ पहुँची, ''अरे ये क्या? तुमने फिर कितना पानी बरबाद कर दिया। देखो, कितना पानी बेकार में बहकर जा रहा है।'' कहते हुए रोमी ने नल बंद कर दिया।

–माँ गर्मी लगती है। पानी में खेलने में मजा आता है।– मगलू ने कहा।

–देखो बेटा, तुम्हें उतना पानी खर्च करना चाहिए जितना जरूरी हो। जितना पानी बचाओगे उतना खेतों में दिया जा सकेगा व फसल भी अच्छी होगी। कारखानों में भी पानी जरूरी होता है। पूरा पानी नहीं मिलने पर हमारे कई कारखाने बंद पड़े हैं।

–पर माँ, नलों में पानी हमारे लिए ही तो आता है।– मगलू ने कहा।

–तुम्हें यहाँ खूब पानी मिल रहा है न इसीलिए तुम्हें उन इलाकों की खबर नहीं जहाँ हमारे जैसे कई प्राणियों को पीने के पानी के लिए दूर-दूर जाना पड़ता है।– रोमी हिरणी ने समझाने का प्रयास किया।

–लेकिन माँ, पिताजी पानी का बिल तो भरते हैं। फिर जब हम पैसे देकर पानी खरीदते हैं तो क्यों न उससे खेलें?–

माँ समझ गई कि जब तक यह खुद पानी के लिए तरसेगा नहीं इसकी समझ में पानी की कीमत नहीं आएगी। वह चुप हो गई और कुछ सोचने लगी। उनके दिमाग में एक 'आइडिया' आ गया।

रविवार को छुट्टी का दिन था। रोमी हिरणी ने कहा– मगलू तुम्हारे चंचल चाचा ने पड़ोस के जंगल में कॉलेज बनाने के लिए जो जमीन खरीदी है न, उसे देखने चलना है। मैं खाना बनाकर पैक कर लेती हूँ। पापा भी हमारे साथ चलेंगे। चंचल हिरण के दोनों बच्चे भी हमारे साथ चल रहे हैं। कॉलेज की जमीन भी देख आएंगे और पिकनिक भी हो जाएगी। वहाँ से शाम तक लौट आएंगे।

–वाह मम्मी, तब तो बड़ा मजा आएगा– मगलू खुश होते हुए बोला।

ठीक समय पर चंचल चाचा अपनी जीप लेकर आ गये। सब तैयार थे ही, जीप में सवार हो गये। आठ-दस किलोमीटर चलने के बाद एक सुनसान जगह पर पहुँच गये। सब बहुत खुश थे।

–क्यों भाई साहब, कॉलेज बनाने के लिए यह जगह ठीक रहेगी न?–

चंचल चाचा ने पूछा तो मगलू के पिताजी बोले– हाँ, बहुत बढ़िया है आबादी से दूर भी है। जंगल के जानवरों को ऊँची पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

–अच्छा, तो भाई साहब, आप लोग पिकनिक मनाइए। मुझे जरा शहर में काम है। बच्चे आपके साथ ही हैं। कितने बजे तक लेने आ जाऊँ, आप लोगों को?

–हम तो खेलने का सामान लाए हैं। आप तो देर से आना। शाम के पांच बजे तक।– बच्चों ने कहा।

वहाँ दूर-दूर तक केवल एक ही छायादार बरगद का पेड़ था। उसी के नीचे रोमी हिरणी ने दरी बिछा दी। सब वहाँ बैठ गये।

कुछ देर में बच्चे बेडमिंटन खेलने चले गये। थोड़ी देर बाद मगलू हिरण माँ के पास आया और बोला– माँ, पानी दो, प्यास लगी है।

रोमी हिरणी ने साथ लाई पानी की बोतल मगलू को पकड़ा दी। कुछ ही देर में मगलू व चाचाजी के बच्चों ने मिलकर साथ में लाई पानी की बोतल खाली कर दी।

दोपहर होते-होते बच्चों को भूख लग गई। रोमी हिरणी ने सबके लिए खाना लगा दिया। खाने में सबको बहुत आनन्द आया। खाने के बाद बच्चों ने पानी मांगा

तो, माँ ने बताया– पानी तो बस उसी बोतल में था। वह तो तुमने खत्म कर दिया।

मगलू ने चारों तरफ देखा। दूर एक हैण्डपम्प दिखाई दिया। तीनों बच्चे खाली बोतल लेकर उसकी ओर दौड़ पड़े। धूप में दौड़कर हैण्डपम्प पर पहुँचते– पहुँचते तीनों पसीने से तर हो गये। अब उन्हें और भी जोर से प्यास लगने लग गई। पर जब उन्होंने हत्था पकड़कर हैण्डपम्प चलाना चाहा तो वह एकदम से नीचे गिर गया। पानी निकला ही नहीं।

–यह हैण्डपम्प तो खराब है।– मगलू बोला। दूर-दूर तक दूसरा हैण्डपम्प भी दिखाई नहीं दे रहा था। वहाँ से वापस बरगद के पेड़ तक आते-आते तो तीनों का बुरा हाल हो गया। सबसे छोटा हिरण रोने भी लगा।

–कोई बात नहीं प्यास लगी है तो संतरे की फांके चूस लो।– रोमी हिरणी ने टोकरी से संतरा निकालकर देते हुए कहा।

संतरा खाकर मगलू बोला– इससे कुछ नहीं हुआ माँ, मुझे तो पानी ही चाहिए। प्यास के मारे जान निकली जा रही है।– वह रुआंसा हो उठा।

–बेटे, अब मैं यहाँ पानी कहाँ से लाऊँ? भयंकर गर्मी पड़ रही है और अंकल भी तो शाम तक लेने आएंगे। कुछ देर की ही तो बात है शाम को घर जाकर खूब पानी पी लेना।– रोमी हिरणी ने कहा।

तीन बजते-बजते बच्चों का बुरा हाल हो गया।

–बहुत गर्मी है, माँ! चाचा कब आएंगे। प्यास के मारे गला सूख रहा है।

–तुम्हीं ने पांच बजे तक आने को कहा था।– पिताजी बोले।

–ओह माँ, अब तो रहा नहीं जाता। कहीं से एक घूंट पानी भी नहीं मिल सकता क्या?– मगलू खाली बोतल को टटोलते हुए बोला।

–लगता है अब तुम्हें पानी की एक बूंद की कीमत का अंदाजा लग चुका है। एक-एक घूंट पानी के लिए जानवर कैसे तरसते हैं, तड़फते हैं। इसका अनुभव तुम्हें हो चुका है। चिन्ता न करो तुम्हारे चाचा आते ही होंगे। मैंने उन्हें तीन-सवा तीन बजे तक आने को कह दिया था क्योंकि मैं जानती थी कि इतने समय में ही तुम्हें पानी की कीमत अच्छी तरह पता चल जायेगी।– माँ ने कहा।

तभी उन्हें दूर एक जीप आती दिखाई दी। बच्चे खुशी से उछल पड़े। चंचल भाई, हम जिस काम के लिए आये थे, वह हो चुका है। अब बच्चों को पानी पिला दो।– मगलू के पिताजी ने कहा।

चंचल हिरण ने मुस्कुराते हुए जीप में रखी पानी की बोतलें बच्चों को पकड़ा दीं। बच्चों ने ठंडे पानी की बोतलें लीं और गटागट ढेर सारा पानी पी गये।

''अब पता चला माँ, जिस पानी को हम बुरी तरह बर्बाद करते हैं उसकी एक-एक बूंद कितनी कीमती होती है। अब हम बिल्कुल भी पानी बरबाद नहीं करेंगे।

सब बच्चों ने वादा किया तथा सब अपने घर की ओर वापस लौट पड़े।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

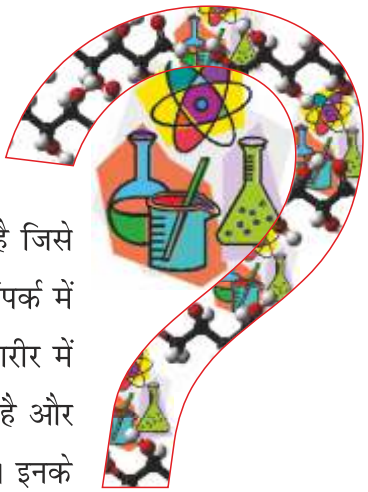

प्रश्न : जुगनू प्रकाश क्यों देता है?

उत्तर : दरअसल, जुगनू की ग्रंथि से एक प्रकार का द्रव निकलता रहता है जिसे 'लूसी फेरीन' के नाम से जाना जाता है। यह पदार्थ जब वायु के संपर्क में आता है, तो जल उठता है। सांस के साथ ऑक्सीजन जुगनू के शरीर में प्रविष्ट होती है। फलस्वरूप, जुगनू रूक-रूककर चमकने लगता है और प्रकाश देता है। चमकते हुए जुगनू तो तुम्हें आकर्षक लगते ही हैं। इनके चमकने का कारण भी आज तुम जान ही गए हो।

प्रश्न : त्वचा पर झुर्रियां क्यों आने लगती हैं?

उत्तर : उम्र बढ़ने के साथ-साथ त्वचा पर झुर्रियां भी आने लगती हैं। जानते हो क्यों? दरअसल, 20 वर्ष की आयु के पश्चात् व्यक्ति में कोलाजेन उत्पन्न करने की क्षमता एक प्रतिशत प्रतिवर्ष कम होती जाती है। नतीजा यह निकलता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ त्वचा पतली और कमजोर पड़ने लगती है। त्वचा (skin) में पसीना, तेल, एलास्टिन और ग्लाइकोसैमिनोग्लाइकैंस (GAG) पैदा करने वाली ग्रंथियां (Glands) अपना काम करना कम कर देती हैं जिससे त्वचा पर झुर्रियां आने लगती हैं।

प्रश्न : कुछ लोगों की त्वचा कटने पर अधिक खून क्यों बहता है?

उत्तर : यदि तुम्हारी त्वचा कट जाए, तो थोड़ी देर बाद वहाँ थक्का जम जाने से खून का बहना अपने आप थम जाता है। दरअसल, खून में तीन प्रकार की कणिकाएं पाई जाती हैं- लाल, श्वेत एवं बिम्बाणु। बिम्बाणु (Thrombocytes) नामक कणिकाओं का कार्य है- बहते हुए खून को जमाना। किन्तु कुछ लोगों की त्वचा कटने पर उनका खून लगातार बहता रहता है, रूकता नहीं। ऐसा उनमें बिम्बाणुओं की कमी के कारण होता है और ऐसे व्यक्तियों को 'हीमोफीलिया' नामक रोग अपनी गिरफ्त में ले लेता है।

प्रश्न : सांप केंचुली क्यों बदलता है?

उत्तर : दरअसल, सांप के शरीर में जीवनपर्यन्त वृद्धि होती रहती है। यहाँ तक कि वृद्धावस्था में भी सांप बढ़ते रहते हैं। शारीरिक वृद्धि के कारण सांप की त्वचा छोटी पड़ जाती है। अत: निर्धारित समय के बाद वह अपनी बाहरी त्वचा को छोड़ देता है। इसी को सांप की केंचुली बदलना कहते हैं। सांप एक से तीन महीने की अवधि में केंचुली बदलता है।

लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

सुरीली आवाज की धनी : मैना

मैना मूलत: 'स्टर्निडा' घराने से सम्बन्धित है। संसार भर में मैना की तकरीबन बीस विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। हमारे देश में उत्तरी कश्मीर के अत्यधिक ठंडे इलाके को छोड़कर पूरे देश में मैनाओं का बसेरा है। सामान्य मैना के साथ ही इनकी पांच-छ: और किस्में भारत में पाई जाती हैं। बहुत प्राचीनकाल से ही मैना आदमी की बहुत अच्छी दोस्त रही है। सामन्ती युग में तो तकरीबन हर राजमहल में इसका विशिष्ट स्थान रहता था। वहाँ इन्हें स्वर में गाने और शिष्ट वार्तालाप के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। शायद इतने समय तक आदमी के साथ रहकर मैना को भी मनुष्य जाति से लगाव-सा हो गया है, यह आज भी मानव-आवास के करीब रहना पसन्द करती है। अक्सर यह बाग-बगीचों और घरों के आंगन में फुदकती-चहकती नजर आती है। वैसे मैना जंगलों, पहाड़ों, गाँवों, शहरों, रेगिस्तानों आदि सभी स्थानों पर आसानी से रह लेती है।

सामान्य घरेलू मैना रंग-रूप व शारीरिक संरचना के नजरिए से एक खूबसूरत पक्षी मानी जाती है। इसकी लम्बाई पूंछ सहित नौ इंच के लगभग होती है। इसके जिस्म की रंगत गहरी भूरी अथवा लालिमायुक्त भूरी होती है। चोंच व पैरों का रंग हल्के पीलेपन की आभा से युक्त होता है। आँखों की पृष्ठभूमि में चमकदार पीले रंग की तिकोनी पट्टी बनी होती है तथा इसका सिर, गरदन और सीना छोटे-छोटे गहरे काले पंखों से ढका होता है। पूंछ के आखिरी सिरे के पंख हल्के काले रंग के बने होते हैं।

सामान्य मैना के अतिरिक्त इसकी अन्य प्रजातियों में 'किलहटा' नाम की मैना मशहूर है। आकार की दृष्टि से यह मैना परिवार की सबसे बड़ी सदस्य है। इसकी लम्बाई करीब एक फुट तक होती है, जबकि गंगा मैना कद में अपेक्षाकृत छोटी होती है। इसकी लम्बाई करीब छ: इंच होती है। इसके शरीर के रंग में भूरे के साथ चमकदार हल्के नीले रंग का सम्मिश्रण होता है। चोंच का रंग पीला न होकर नारंगी होता है। यह अक्सर नदी या दरिया के किनारे घर बनाकर रहती है। इस कारण इसे 'दरिया मैना' के नाम से भी जाना जाता है। यह 'मैना-समाज' की सबसे खूबसूरत और हसीन सदस्य है- 'गुलाबी मैना' चमकीले काले रंग के सिर, सीने और गर्दन के अलावा इसका बाकी शरीर निहायत मोहक गुलाबी रंग का

होता है, जो बरबस ही हर किसी का ध्यान आकृष्ट कर लेता है। यह ग्रीष्मकाल में प्रवासी की तरह हमारे देश में आती है। मैनाओं की अन्य किस्मों में जंगली-मैना, बामनी मैना, तेलिया मैना, अबलखा मैना आदि उल्लेखनीय हैं।

खान-पान की दृष्टि से मैना एक सर्वभक्षी प्राणी है। कीड़े-मकोड़े, मच्छर-मक्खी, टिड्डी, कॉकरोच, अनाज, फल-फूल आदि जो भी समय पर उपलब्ध हो जाए, वह मैना आराम से खा लेती है। खेतों के कीड़े-मकोड़े व कीट-पतंग इसका प्रिय भोजन है। इन्हें खाकर यह 'किसान की दोस्त' की भूमिका बखूबी निभाती है। सांप, बिल्ली, नेवला, बाज आदि प्राणियों से मैना की न जाने किस जन्म की दुश्मनी है। दिन के समय इन प्राणियों को देखते ही घरेलू मैना तेज व तीखे स्वर में लगातार चीखने लगती है। यह संकेत मनुष्य को सतर्क करने के लिए बहुत उपयोगी है।

नर-मादा दोनों मिलकर वृक्षों की कोटरों, घर की दीवारों, कुओं के सुराखों आदि सुरक्षित स्थानों पर तिनकों, घास-फूस, कागज आदि से सुविधापूर्ण एवं आरामदायक घोंसले का निर्माण करते हैं। जहाँ मादा मैना 4 या 5 अंडे देती है। इन अंडों का रंग नीला होता है। घोंसलों के स्थान का चयन मैनाएं सावधानीपूर्वक करती हैं तथा आमतौर पर हर साल उसी स्थान पर अंडे देती हैं।

शाम के वक्त वृक्षों की डालियों या बिजली के तारों पर बैठकर मैनाएं एक सूमहगान सा गाती हैं। इसकी विशेषता यह है कि इस गान की लय नहीं टूटती। गायन-विद्या के मामले में पहाड़ी मैना अत्यन्त निपुण एवं पारंगत होती है। बहुत मीठे और सुरीले स्वर में उसकी चहचहाट दूर वादियों में गूंजते मधुर गीत की मानिन्द लगती है। कई मैनाएं तो आदमी की आवाज की हू-बू-हू नकल तक कर लेती हैं। अन्य पक्षियों की आवाज की नकल करना भी पहाड़ी मैना के लिए मुश्किल नहीं है।

कुल मिलाकर मैना सुन्दर तथा मनुष्य जाति के लिए एक हानिरहित उपयोगी पक्षी है, जो अपने स्वरों से आदमी का मनोरंजन भी करती है। ●

जिगर या यकृत के कृत्य

- मानव शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत है।
- इसका वजन लगभग 1.5 किलों से लेकर 2 किलो तक होता है।
- यकृत द्वारा ही पित्त स्रावित होता है। यह पित्त आँत में उपस्थित एंजाइमों की क्रिया को तीव्र कर देता है।
- यकृत प्रोटीन की अधिकतम मात्रा को कार्बोहाइड्रेट में भी बदल देता है और भोजन में वसा की कमी होती है तो यकृत कार्बोहाइड्रेट के कुछ भाग को वसा में भी बदल देता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कमलड़ा

वाह! यहाँ पर कितना अच्छा मौसम है।
दोपहर बाद ...
क्या किट्टी तुम्हारे घर पर आई है?
नहीं; हमारे घर नहीं आई।
शाम को ...
देखो! किट्टी बेटा, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।

किट्टी तो सुबह बाजार गई थी। अभी तक बाजार से नहीं आई, पता नहीं कहाँ पर होगी?
हम सब अभी किट्टी को ढूंढने जाते हैं।
हम सब अभी किट्टी को ढूंढने जाते हैं।
क्यों न हम सब अलग-अलग जगह पर जाकर किट्टी को ढूंढें?
अरे! किट्टी बेटा क्या हुआ? तुम यहाँ पर क्या कर रही हो?

अरे! किट्टी तुम यहाँ बैठी हो। हम सब तुम्हारे लिए कितने परेशान थे? तुम यहाँ क्यों बैठी हो?
पापा, मुझे अभी घर नहीं जाना।
पर क्यों बेटा? क्या तुम्हारी मम्मी तुमसे काम करवाती है इसीलिए।
बेटा, मम्मी-पापा बच्चो को काम सीखाने के लिए उनसे काम करवाते हैं ताकि भविष्य में वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।
मम्मी मुझे माफ कर दो। अब से ऐसी गलती नहीं होगी? मैं तुम्हारा कहना मानूंगी।

संग्रहकर्ता : जगतार चमन (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ जब हम कोई अच्छा कार्य करते हैं तो शक्ति अपने आप आ जाती है। – प्रेमचन्द

★ आत्मज्ञान सर्वोत्तम ज्ञान है। – सुकरात

★ सुन्दर वह है जो सुन्दर कार्य करे। – फीलिंडग

★ केवल शिक्षित लोग ही स्वाधीन हैं।
– एपिकरी रस

★ आलस्य दरिद्रता का मूल है। – यजुर्वेद

★ अमीरी दिल से होती है, पैसे से नहीं। बड़प्पन बुद्धि से होता है, आयु से नहीं। – बेकन

★ पुरुषार्थी वह है जो भाग्य की रेखा मिटा दे।
– शीलानाथ

★ प्रशंसा का भूखा व्यक्ति यह साबित करता है कि वह योग्यता में कंगाल है। – प्लूकर्ट

★ निराशा मूर्खों का निष्कर्ष है। – डिजरेली

★ अपनी निंदा सहने की शक्ति रखनेवाला व्यक्ति मानो विश्व पर विजय पा लेता है।
– महाभारत

★ कला में उतर जाइये, जीवन का तल पा लेंगे।
– आस्कर वाइल्ड

★ भलाई जितनी अधिक हो जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। – मिल्टन

★ परिश्रम लाभ देता है, आलस गरीबी लाता है।
– अज्ञात

★ अगर आप किसी चीज का सपना देख सकते हैं तो उसे पा भी सकते हैं। – जिग जिगलर

★ मोह में हम बुराईयां नहीं देख पाते लेकिन घृणा में हम अच्छाईयां नहीं देख पाते। – इबा एजरा

★ वह जो सभी की प्रशंसा करता है, कोई नहीं प्रशंसा करता। – सैमुएल जॉनसन

★ मैं अपनी परिस्थितियों का उत्पादक नहीं हूँ। मैं अपने निर्णयों का उत्पादक हूँ।– स्टीफन कॉवि

★ धैर्यवान पुरुष कार्य आरम्भ करने के बाद असफल होकर नहीं लौटते।
– कथा सरित सागर

★ अगर आप चिन्ता करते हैं तो आप अपने जीवन के शत्रु हैं। – शेक्सपीयर

★ संसार में मानव के लिए क्षमा एक अलंकार है। – बाल्मीकि

★ जीवन में आशा-निराशा धूप-छांव के समान है। – इमर्सन

★ कठोर शब्दों में कहे गये हितकर वाक्यों को सुनकर भी मनुष्य रुष्ट हो जाते हैं। – भास

★ अवसर को खो देना सफलता को खो देना है।
– चार्ल्स

★ जो धैर्यवान और मेहनत से नहीं घबराता सफलता उसकी दासी है। – ईसा मसीह

बाल कविता : मीनू सिंह

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी,
आती खूब तुम्हें शैतानी।

कभी न करती आना-कानी,
झटपट खाती दाना-पानी।

आहट पाते ही उड़ जाती,
नन्हें-नन्हें पंख हिलाती।

एक-एक तिनका चुनकर के,
सदा घोंसला नया बनाती।

जाड़ा-गर्मी या हो वर्षा,
अपने घर में ही सुख पाती।

दिनभर इधर-उधर उड़ जाती,
सांझ ढले घर वापस आती।

सुबह-सवेरे उठकर बच्चों-
दाना दुनका चुगने जाती।

उठो! सवेरे करो परिश्रम,
सदा सीख हमको दे जाती।

बाल कविता : गौरीशंकर वैश्य

चिड़िया

मेरी छत पर आ री चिड़िया।
सुबह-सवेरे किसको टेरे।
चूँ-चूँ टिंउ-टिंउ गा री चिड़िया।

दाना-पानी ले-ले रानी।
गेहूं चावल खा री चिड़िया।
उछल-उछलकर फुदक-फुदककर।
बच्चों को भी ला री चिड़िया।

मित्र बनाओ सैर कराओ।
पंख दिला दो प्यारी चिड़िया।
क्यों उदास है वृक्ष पास है।
दूर कहीं मत जा री चिड़िया।

जानकारी : उदय ठाकुर

प्रकृति के अजूबे ये फूल

सावनी फूल– सूडान के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष है जब उसमें फूल उगते हैं तो वर्षा हो जाती है। भारत में सावनी नामक पौधे में बरसात के पूर्व फूल खिलते हैं। सावनी की जड़ें धरती में हैं परन्तु आकाश मे आने वाले बादलों की सूचना उसे कैसे मिल जाती है। शायद यह रिश्ता और संवाद प्यास से जुड़ा है।

नारी पोल–

थाईलैंड के पेचाबून शहर में जो फूल लगता है वह बिल्कुल नारी के आकार का है। पेड़ को नारी पोल का नाम दिया गया है। नारी पोल संस्कृत के मिलते-जुलते दो शब्द नारी (औरत) और पोल (पेड़) से बना है। वैज्ञानिकों ने इस पर निकलने वाली कलियों का चीरफाड़ कर अध्ययन भी किया लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सके।

बदबूदार फूल–

शिकागो के बोटैनिकल गार्डन में दुनिया का सबसे बदूबदार फूल टाइटल ऑरा खिला था। साढ़े चार फुट लम्बे इस फूल को देखने कई लोग आए। इसे कोर्प्स फ्लावर भी कहते हैं और यह सिर्फ दो दिन के लिए खिलता है। यह फूल 16 से 20 फुट ऊँचा भी हो जाता है।

ब्रह्मफूल– यह फूल नागालैंड की छेतिया नदी में उगता है। इसे वाटर लिलि भी कहते हैं। नागालैंड की भाषा में वाटर लिलि को सोला कहते हैं। देश दुनिया में फूलों की सैकड़ों-हजारों किस्मों में से सोला फूल ड्राई फ्लावर की श्रेणी में एकमात्र प्राकृतिक फूल है। यह फूल छेतिया नदी जो ब्रह्मपुत्र नदी से निकलती एक छोटी नदी है और असम, नागालैंड होकर मणिपुर पहुँचती है, में होता है। ब्रह्मपुत्र नदी से निकली होने के कारण सोला फूल को ब्रह्मफूल भी कहते हैं।

लोककथा : पुष्कर द्विवेदी

अक्लमन्द लड़का

एक लड़का एक जमींदार किसान के घर मजदूरी करता था। किसान और उसकी पत्नी बेहद कंजूस थे। वे दोनों उस लड़के से काम तो खूब लेते लेकिन भोजन भरपेट नहीं देते थे। लड़का बहुत परेशान रहता।

एक दिन लड़के ने अपनी परेशानी और अपने मालिक को छकाने का हल ढूंढ़ ही लिया। वह काम छोड़ना नहीं चाहता था। काम छोड़ता तो भूखों मरता। अत: एक दिन जब किसान ने लड़के को खेत पर काम करने के लिए भेजा तो किसान की पत्नी ने एक डिब्बे में उस लड़के का खाना रख दिया। तभी किसान ने लड़के को हिदायत दी– जल्दी काम करके लौटना। यहाँ घर पर भी काफी काम है।

–ठीक है।– लड़के ने जवाब दिया और खाना लेकर चल दिया। रास्ते में लड़के ने डिब्बे को खोलकर देखा तो उसमें रूखी-सूखी रोटी और अचार था। लड़का रास्ते में एक पेड़ के नीचे रूका।

–नमस्ते पेड़ दादा।

–नमस्ते– पेड़ की ओर से लड़के ने स्वयं जवाब में कहा।

–मैं खेत पर काम करूं या आराम से तुम्हारी छाया में रहूँ।

–आराम से लेटो। पेड़ की ओर से लड़के ने फिर जवाब दिया।

–परन्तु अपने डिब्बे से भी तो पूछ लो।– पेड़ की ओर से लड़के ने स्वयं से कहा।

–डिब्बे से क्या पूछना। उसमें तो रूखी-सूखी रोटी और अचार है। डिब्बा तो बिल्कुल ही आराम करने को कहता है।– लड़के ने आश्वस्त होकर कहा।

–फिर ठीक है।– पेड़ की तरफ से लड़के ने सहमति दी। आखिर भूखे पेट से तो मेहनत नहीं की जा सकती।

लड़का पेड़ के नीचे लेटकर आराम करने लगा।

किसान को जब पता चला कि खेत पर कुछ भी काम नहीं होता और वह लड़का एक पेड़ के नीचे आराम से लेटा रहता है तो वह अगले दिन लड़के के पीछे-पीछे गया और देखा कि लड़का एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ है।

–क्यों रे, क्या कर रहा है यहाँ? ये कौन-सा खेल है जो तू खेलता रहा है? तूने खेत में जरा भी कटाई का काम नहीं किया। तू खेत पर कटाई का काम कब करेगा?– किसान ने डपटकर लड़के से पूछा।

–जब मुझे डिब्बे का आदेश मिलेगा, तब मैं खेत पर काम करूंगा।– लड़के ने उत्तर दिया। फिर लड़के ने कहा– अभी खाने के डिब्बे और पेड़ की आज्ञा नहीं हुई है कि मैं खेत की कटाई करूं।– किसान चुपचाप घट लौट आया। उसने दूसरे दिन अपनी पत्नी से कहा– लड़के को आज खाने में हलवा-पूड़ी देना।

लड़का दूसरे दिन डिब्बे में खाना लेकर चला। उसने उसी पेड़ के नीचे जाकर डिब्बे को खोलकर देखा। उसमें हलवा-पूड़ी देखकर खुश हुआ। उसने भरपेट हलवा-पूड़ी खाया। फिर पेड़ से उसी प्रकार पूछा– पेड़ भाई, क्या आज भी आराम करना चाहिए?

–यह डिब्बे से पूछो– पेड़ की तरफ से लड़के ने कहा– हाँ, आज आराम नहीं, खेत पर काम करना चाहिए।– डिब्बे की ओर से लड़के ने कहा।

लड़का पूरी लगन और परिश्रम के साथ फिर खेत में कटाई पर जुट गया। उस दिन उसने खेत पर काफी काम किया।

–अरे वाह! दो दिन का काम तुमने एक ही दिन में कर डाला।– किसान ने शाम को खेत पर आकर लड़के से खुश होकर कहा।

–क्यों डिब्बे भाई, यह मालिक साहब क्या कह रहे हैं?– लड़के ने खाली डिब्बे की ओर देखते हुए कहा।

–ऐसे ही पेट भर बढ़िया भोजन मिलेगा तो आगे भी ऐसे ही दो दिन का काम एक ही दिन में हो सकेगा।– डिब्बे की ओर से लड़के ने कहा तो किसान वास्तविकता को समझ गया।

अब किसान कंजूसी छोड़कर लड़के को बढ़िया और भरपेट भोजन देने के साथ-साथ स्नेह और दुलार भी देने लगा। लड़का भी ईमानदारी और लगन से किसान के प्रति समर्पित भाव से काम-काज देखने लगा। उसने अपनी अक्लमंदी से मालिक किसान का हृदय बदल दिया था।

प्रेरक–प्रसंग :
सीताराम गुप्ता

मरहम

एक बुज़ुर्ग व्यक्ति था; जो बेहद कमज़ोर और बीमार था। रहता भी अकेले ही था। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतना कमज़ोर था कि खुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ था। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करता तो कभी किसी से। एक दिन बुज़ुर्ग व्यक्ति ने पास से गुज़रने वाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दो। भगवान तेरा भला करेगा।

युवक ने कहा कि बाबा मेरे हाथों की अंगुलियों में तो खुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुज़ुर्ग ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी अंगुलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर अंगुलियों से बुज़ुर्ग व्यक्ति के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुज़ुर्ग की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगा। बेटा, भगवान तेरी अंगुलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुज़ुर्ग के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी अंगुलियों का दर्द भी ग़ायब–सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुज़ुर्ग को मरहम लगाने के दौरान युवक की अंगुलियों पर भी कुछ मरहम लग गई थी। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक की अंगुलियों का दर्द ग़ायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बुज़ुर्ग व्यक्ति के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुज़ुर्ग पूरी तरह से ठीक हो गया और साथ ही युवक के दोनो हाथों की अंगुलियां भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती। दूसरों की मदद करके हम अपने लिए रोग–मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु ही सुनिश्चित करते हैं।

कैसे कैसे वृक्ष

★ आस्ट्रेलिया में टिनास नामक एक वृक्ष पाया जाता है जो साल में दो बार अपनी छाल बदल लेता है।

★ न्यूजीलैण्ड में मिंका नामक एक वृक्ष पाया जाता है, जिस के तने से मक्खन जैसा द्रव निकलता है। यह गाढ़ा होता है तथा स्वाद में बेहद मीठा होता है। स्थानीय निवासी इस द्रव को भोजन में मक्खन के बजाय इस द्रव का उपयोग प्रतिदिन करते हैं।

★ कोलकाता मे बाटनिकल गार्डन में एक ऐसा विशालकाय वृक्ष है जो 10 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। यह 27 मीटर ऊँचा तथा 250 वर्ष पुराना है।

पढ़ो और हँसो

लाली : अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

दो मूर्ख एक पेड़ की डाल से लटके थे तभी एक मूर्ख नीचे गिर गया।

पहला बोला– क्यों थक गये?

दूसरा बोला– यार थका नहीं पक गया।

★----------★

जंगल में हाथी जा रहा था। उसके पीछे-पीछे दो चूहे आ रहे थे। एक चूहा दूसरे चूहे से बोला– इस हाथी से पुराना हिसाब चुकाना है, तू बोले तो इसे लंगड़ी मार कर अभी गिरा दूं?

दूसरा चूहा बोला– रहने दे यार, हम दो हैं और वह अकेला। लोग क्या सोचेंगे? दो चूहों ने मिलकर एक बेचारे हाथी को गिरा दिया।

★----------★

डाकू : (सेठ से) बोलो सेठ, जान देते हो या माल?

सेठ : भाई जान ही ले लो, माल तो बुढ़ापे में काम आयेगा।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

★----------★

मरीज : (नर्स से) क्या डॉक्टर साहब ने अभी तक नींद की गोलियां नहीं भेजी?

नर्स : जी नहीं।

मरीज : जल्दी मंगवाओ, मुझे नींद आ रही है अब मैं गोलियों के इंतजार में और नहीं जाग सकता।

★----------★

माँ : (निष्ठा से) अरे तेरी बहन को स्कूल से छुट्टियां मिलने पर तू क्यों रो रही है?

निष्ठा : अगर मैं भी स्कूल जाती होती तो मुझे भी छुट्टियां मिलतीं।

★----------★

पहला बच्चा : (दूसरे बच्चे से) तुम्हें पता है मेरे पापा के एक इशारे से सैंकड़ों गाड़ियां चलती और रुकती हैं।

दूसरा बच्चा : तब तो तुम्हारे पापा कोई बहुत बड़े अधिकारी होंगे?

पहला बच्चा : नहीं! वे तो ट्रैफिक पुलिस में हैं।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

नवीन : (अपने मोहल्ले के चौकीदार से) रामलाल, तुम रात को पहरा देते समय 'जागते रहो' ही क्यों बोलते हो?

चौकीदार : साहब, इसलिए कि आप लोग जागते रहें और मैं सो जाऊँ।

★----------★

रिंग मास्टर : (सर्कस के कर्मचारी से) तुमने शेर के बाड़े में ताला क्यों नहीं लगाया?

कर्मचारी : क्या जरूरत है सर। इतने खतरनाक जानवर को कौन चोरी करेगा।

माँ : राजू, तुमने छोटू को क्यों पीटा?

राजू : वह मेरी बात का जवाब नहीं दे रहा था।

माँ : उसे अभी बोलना नहीं आता।

राजू : तो उसे बोलना चाहिए था कि उसे बोलना नहीं आता।

★----------★

मिठाई की दुकान पर लिखा था– यहाँ बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई मिलती है।

रवि ने उसके आगे लिख दिया– इस बात की गवाह यहाँ पर भिनभिना रही ये हजारों-लाखों मक्खियां हैं।

★----------★

एक बार एक हाथी जंगल से गुजर रहा था तो सब चूहे अपने-अपने बिलों में घुस गये परन्तु एक चूहा अपने पैर बाहर निकाले हुए था।

दूसरे चूहे ने उससे पूछा– तुमने अपना पैर बाहर क्यों निकाल रखा है।

पहला चूहा बोला– जब हाथी मेरे पास आयेगा तो मैं हाथी को अपने पैर से अड़ंगी मारकर गिरा दूँगा।

★----------★

मोहन : यार मैं अपना पर्स घर भूल आया हूँ, मुझे 100 रुपये की जरूरत है।

सोहन : कोई बात नहीं। एक दोस्त ही दोस्त के काम आता है। ये लो 10 रुपये। घर जाकर अपना पर्स ले आओ।

★----------★

डॉक्टर : (मरीज से) आपने जो चैक दिया था वो बैंक से वापिस आ गया है।

मरीज : मेरी बीमारी भी लौट आई है।

★----------★

एक आदमी ने रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति से पूछा– श्रीमान पूछताछ कार्यालय किधर है?

व्यक्ति बोला– 'इंक्वायरी ऑफिस' से मालूम कीजिए।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

प्रेरक-प्रसंग : ऊषा सभरवाल

धीर गति

प्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक पॉवलोव जब मृत्यु के निकट थे तो उनके प्रिय छात्रों ने उनसे सफलता का रहस्य पूछा जो उनके जीवन में भी उपयोगी हो।

उत्तर में पॉवलोव ने कहा था–

तीव्र इच्छा और धीर गति।

तीव्र इच्छा का अर्थ है 'सच्ची लगन' और धीर गति से मतलब है 'प्रगति के दौरान धैर्य रखना' किसी भी क्षेत्र में विजयी होने के लिए मन में केवल तीव्र इच्छा ही नहीं वरन धीरे-धीरे बढ़ने का धैर्य भी होना चाहिए। जल्दबाजी में लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास कभी-कभी असफलता का कारण बन जाता है। तीव्र इच्छा का अर्थ है लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प। हमें अपने जीवन में सभी कार्य पूरी निष्ठा के साथ करने चाहिएं। सतत् अभ्यास से ही जीवन में सफलता का रहस्य है।

आज हमारी सबसे बड़ी समस्या है कि हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए अभ्यास धैर्यपूर्वक नहीं करते। कार्य शुरू कर देते हैं। मुझे याद है कि जब हम छोटे थे तो आम की कोई गुठली उठाकर छोटे से बर्तन में मिट्टी डालकर बो देते थे। एक घंटे बाद जाकर देखते थे कि पेड़ उगा या नहीं। गुठली निकालकर मिट्टी झाड़कर, धोकर फिर बो देते थे। इन्तजार केवल इन्तजार बनकर रह जाता था। पेड़ कभी उग ही नहीं सका। अगर गुठली को हम जमीन में बोकर धैर्यपूर्वक इन्तजार करते तो अवश्य पेड़ उगता, आम लगते।

एक अंग्रेजी की कहावत भी है– A short cut may cut you short संक्षिप्त उपाय को अपनाने पर विफल होने की ही अधिक सम्भावना है।

यह कहावत हमें यही सन्देश देती है कि सफलता के लिए कोई सुगम मार्ग नहीं होता। इन शब्दों में यही सच छुपा हुआ है।

पॉवलोव के शब्दों का केवल इतना ही भाव है कि तीव्र इच्छा व धीरे-धीरे बढ़ने का धैर्य ही सफलता की कुंजी है।

आइए, इन शब्दों को जीवन में स्थान दें।

पक्षी-ज्ञान

★ बिटर्न एक ऐसा पक्षी है, जो बाघ की तरह बोलता है।

★ शुतुरमुर्ग सबसे बड़ा पक्षी है।

★ अधिकांश नर पक्षी गीत गाते हैं।

★ कोयल कभी घोंसला नहीं बनाती।

★ शुतुरमुर्ग पक्षी का अंडा सबसे बड़ा होता है।

★ काले रंग के हंस आस्ट्रेलिया में पाये जाते हैं।

★ सबसे खतरनाक पक्षी कैसोबरी बर्ड होता है।

★ दुनिया का सबसे छोटा पक्षी है हमिंग बर्ड।

★ बुलबुल चिड़िया की आवाज सबसे मधुर होती है।

प्रस्तुति : प्रतीक्षा कुशवाहा

दो बाल कविताएं : रामअवध राम

तितली

रंग-बिरंगे रंगों वाली।
उड़ती-उड़ती आती तितली।
फूल-फूल हर कली-कली पर।
चंचलता दिखलाती तितली।

कभी इधर से उधर को जाती।
कभी इधर मुड़ आती तितली।
ऐसे ही फूलों के ऊपर।
दिन भर खेल रचाती तितली।

घूम-घूमकर बगिया की।
सुन्दरता बढ़ाती तितली।
गुनगुनाते फूलों पर।
भौंरे के संग भाती तितली।

अपने सुन्दर पंखों से।
बच्चों का जी ललचाती तितली।
जब भी इन्हें पकड़ते बच्चे।
झट ऊपर उड़ जाती तितली।

जागो बच्चो

जागो बच्चो आँखों खोलो,
हाथ मुँह अपना धोलो।

रात की बीती घड़ियां,
पेड़ों पर चहकी चिड़ियां।

बहने लगी पवन सुखदाई,
फूल हँसे कली मुस्कुराई।

अम्बर में छाई लाली,
धरती की छटा निराली।

निकला सूरज सुबह हो आई,
जल में चमक किरण की छाई।

समय सुनहरा तुम ना खोओ,
प्यारे बच्चो अब ना सोओ।

फरवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1

प्रतिभा यादव **11 वर्ष**
मकान नं. 160/12, गली नं. 5,
कृष्णा कालोनी, गुरुग्राम (हरि.)

2

रतिका **11 वर्ष**
मकान नं. 563, सेक्टर-13,
अर्बन एस्टेट, कुरुक्षेत्र (हरि.)

3

दीप्ति राणा **12 वर्ष**
3252/1, धनास,
चंडीगढ़

4

मीत ए. कमनानी **12 वर्ष**
203, सत्यम अपार्टमेंट, गायत्री नगर,
बमरोली रोड, गोधरा (गुजरात)

5

माधव कलवानी **12 वर्ष**
डी-5, नियर पी.टी. मिरानी हॉस्पिटल,
गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

प्रेम प्रकाश (सरदार शहर), आयुषी (जतेहर), लतिका प्रसाद (सरदार नगर), मनित (तापस), साहिल (पीरथला), अद्वितीय (सुन्दरनगर, अजमेर), अमृता (सरायरैचन्द), धीरज (कर्णप्रयाग), सुमति (कानपुर), जाग्रती (जमशेदपुर), अमन (झाकड़ी), सौम्य (अरनिया), सिमरन (फगवाड़ा), मधु (मनीपुर), हर्षिता (रांची), रजित (ठाकुरपुरा), श्लोक, संध्या (सातरस्ता, मुंबई), गुरमीत (गाजीपुर), आयुष (अमरापुरी), अखिलेश (गुरुग्राम), नवरूप (मोहाली), नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली), साहिल, ओम सोमजनी, भाविका, आरती, दक्ष, भूमि, मोक्ष, लखन, कृष्णा (गोधरा), श्रेय, लवलीन, निश्चय, निहारिका, कमलजीत कौर (मोजूखेड़ा), श्रीकंथ (महादेव नगर, कलबूर्गी) शोभित (गाँधीनगर, कोल्हापुर)

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 अप्रैल तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009** को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जून अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र

जनवरी 2018 अंक प्राप्त कर मन खुशी से झूम उठा। बच्चे कैसे छुट्टी का आनन्द ले रहे हैं मुखपृष्ठ पर यह देखकर हर्ष हुआ। कविताएं 'गणतंत्र दिवस' व 'नया वर्ष आया' (हरजीत निषाद) बहुत अच्छी लगीं।

लेख में 'मूंगफली' (राजकुमार जैन) के बारे में उपयोगी बातें बताई गई हैं। विज्ञान प्रश्नोत्तरी बहुत ज्ञानवर्धक है। प्रेरक-प्रसंग भी अच्छे हैं। हमने बच्चों को पिकनिक पर हँसती दुनिया से कहानियां पढ़कर सुनाई व प्रतियोगिता भी करवाई।

यह पत्रिका दिन पर दिन निखर कर आ रही है। यह और ऊँचाईयों को छूये। ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

– अमिता मोहन (भटिंडा)

मुझे हँसती दुनिया बेहद पसन्द है। मैं हँसती दुनिया को नियमित रूप से पढ़ती हूँ और लोगों को भी पढ़वाती हूँ। हमारे माता-पिता एवं पड़ोस के लोगों को भी हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। उनका कहना है कि हँसती दुनिया न सिर्फ बच्चों के लिए बल्कि यह पत्रिका बड़ों को भी बहुत कुछ सिखाती है। ऐसे ही आप हमारा मार्गदर्शन बढ़ाते रहें।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरा परिवार इसे चाव से पढ़ते हैं। इसमें मुझे कहानियां तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगते हैं। यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है। इस पत्रिका की कहानियां बुद्धिमत्ता एवं वीरता दर्शाती है।

यह पत्रिका विशेष रूप से छोटे बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिए लाभदायक है। इससे काफी अच्छी जानकारी मिलती है। **– विकास (धुन्धरी, केकड़ी)**

नया भारत बनाएं

हर घर का चूल्हा जले,
आस हर दिल की फले।
शिक्षा हो हर द्वार पर,
बैठे न कोई मन हार कर।

कौन है ऊँचा कौन है नीच,
दीवारें न बने हमारे बीच।
न जाति न धर्म का मान हो,
आदमी से आदमी की पहचान हो।

पकडें एक दूसरे का हाथ,
करें तरक्की की बात।
उम्मीदों को पंख लगाएं,
आओ नया भारत बनाएं।

– शिवचरण सरोहा (दिल्ली)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 बी			2 ज	ल	3 द	
4 स	5 म	ध	न		6 श	त्रु
	ल		क		ह	
7 द	या	लु		8 इ	रा	9 क
	ल		10 ए	टा		पू
11 न	म	12 क		13 न	ज	र
क		14 बी	जिं	ग		थ
15 ल	की	र		16 ए	सी	ला

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman–713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21st & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)